Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री शक्ति गीताञ्जलि

रचयिता :
सा० महोपाध्याय, आशुकवि, कवि भूषण पण्डित प्रवर
श्रीहरि शास्त्री दाधीच

प्रकाशक :
गोपाललाल माथुर
जयपुर

प्रथमवार २००० | मूल्य १)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❀ विषय सूची ❀

१. प्रकाशक का निवेदन	i से IV
२. शक्ति संकीर्तन के पद	V से VI
३. श्री गणपति स्तुति नं० १	१
४. गणपति स्तुति नं० २	१
५. गुरु पद रज की बलिहारी नं० ३	२
६. प्रथम गुरु पद में चित्त लगाऊँ नं० ४	२
७. आज गुरुवर घर आये नं० ५	३
८. गुरु ने अद्भुत खेल दिखाया नं० ६	४
९. जय जय भारती वीराग धारिणी नं० ७	५
१०. शुद्ध अशुद्ध किसी विध जाप करो वह ताप हरे ही हरे नं० ८	५
११. आदि भैरव नाथ जय हो नं० ९	६
१२. जानत है जगदम्ब सभी.... नं० १०	७
१३. जगत की आपदाऐं सब निवारेगी जगन्माता नं० ११	१०
१४. अए जगदम्बिके मुझको तुम्हारा ही सहारा है नं० १२	११
१५. ध्येय तुही तुझ से मेरा ध्यान न जाने पावे नं० १३	१२
१६. विश्व का शक्ति बिना कोई निदान नहीं नं० १४	१२
१७. नवार्ण मंत्र प्रकाश गीतिका नं० १५	१३
१८. जो न मां का भक्त वह सन्तान क्या नं० १६	१४
१९. माँ तुम्हारे प्रेम का जिसके हृदय में स्थान है नं० १७	१४
२०. बड़ा विश्वास है दुर्गे नं० १८	१५
२१. अब तो निहार मुझ को करुणा निधान काली नं १९	१६
२२. माया नहीं किसी ने जानी नं० २०	१७

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२३. अम्ब तू जग का दुख हरतो नं० २१ १८
२४. भरोसा है मुझे तेरा जगत् शंकारिणी तारे नं० २२ १९
२५. करो साहं साहं उच्चार नं० २३ १९
२६. चण्डिके करदो रिपु संहार नं० २४ २०
२७. मेरा कहा चित्त तू मान नं० २५ २१
२८. जगत अम्बा सिंह चढ़ि आवे नं० २६ २२
२९. महा लक्ष्मी मुझे अपना दरस कब दिखाओगी नं० २७ २३
३०. धन्य जगदम्ब तुम्हीं धन्य तुम्हारी माया नं० २८ २३
३१. अम्बाजी मन भावे रे नं० २९ २४
३२. सखी म्हाने प्यारो लागे ए नं० ३० २५
३३. अम्बिके भारत देश उबारो नं० ३१ २५
३४. चण्डीस्मरण संकट हरण नं० ३२ २६
३५. जय हो जगदम्ब विजय हो नं० ३३ २६
३६. उठ प्रभात चण्डिका के चरण कमल ध्याऊँ नं० ३४ २७
३७. बिना माँ करुणा कौन करे नं० ३५ २७
३८. यही इच्छा है माँ तेरी मैं ऐसी भक्ति कर पाऊँ नं० ३६ २८
३९. मत भूले रे नर नित मैया को नं० ३७ २९
४०. आवो सहेली आँपा चण्डी ने मनावा ए नं० ३८ ३०
४१. अब के कर भव पार मेरी अम्बाजी नं० ३९ ३०
४२. तुम्हें अम्बिका को सुमरना पड़ेगा नं० ४० ३२
४३. नमो देवि आनन्द रूपे अरूपे नं० ४१ ३३
४४. नगराज नन्दनि के दर्शन तो कीजिये नं० ४२ ३५

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

४५. मन ! भंज भवानी को जपवा दे नं० ४३ ३५
४६. भवानी ऐसो कौन उदार नं० ४४ ३६
४७. सफल नर जन्म करना है तो प्रति दिन ध्याइये चण्डी नं ४५ ३७
४८. भजन करना है तो बन्दे भजन कर श्री भवानी का नं० ४६ ३८
४९. मोक्ष की है कामना तो अम्बिका को ध्यायेजा नं० ४७ ३९
५०. माँ जैसा कोई नाम नहीं नं० ४८ ४०
५१. हमारा माँ मय हो संसार ं० ४९ ४१
५२. जगदम्ब हे भवानी शुभ ज्ञान दीजिये नं० ५० ४२
५३. जागिये जगदम्ब भवानी नं० ५१ ४३
५४. गुरु बिन भय से कौन बचावे नं० ५२ ४३
५५. बगला मुखी कर जय जयकार नं० ५३ ४४
५६. मन उसी पन्थ पर चलता है नं० ५४ ४४
५७. दुर्गे दुर्गति हारिणि सुख कारिणि हे नं ५५ ४५
५८. भजो मन भैरव बारम्बार नं० ५६ ४७
५९. महा काली है महा माया नं० ५७ ४७
६०. करेगी तारा भव से पार नं० ५८ ४८
६१. ध्यान कमला का मंगल मूल नं० ५९ ४९
६२. त्रिपुरा बाला की स्तुति नं० ६० ५०
६३. भवानी अन्नपूर्णा में सदा जो लौ लगाता है नं० ६१ ५०
६४. त्रिपुरा माँ ओ त्रिपुरा माँ नं० ६२ ५१
६५. देखिये अद्भुत झाँकी नं० ६३ ५२
६६. धरो मन भुवनेशी का ध्यान नं० ६४ ५३

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

६७. विश्वेश्वरी ! त्वदीयं पदपंकजं नमामः नं० ६५ ५४
६८. किया माँ तुमने उत्तम काम नं० ६६ ५४
६९. करती भव सागर पार माया मातंगी नं० ६७ ५५
७०. सकल दुख ध्यान धरते ही हरे धूमावती माता नं० ६८ ५६
७१. भगवती के सिंह की स्तुति नं० ६९ ५७
७२. भगवती आयुध स्तव नं ७० ५७
७३. अम्बा अश्वघाटी स्तुति नं० ७१ ६३
७४. जगदम्ब तुम्हारी समझ पड़ी नहीं माया नं० ७२ ६५
७५. अम्बिका महिमा नं० ७३ ६९
७६. ऐरी जगदम्बा मेरी बेर क्यों लगाईरी नं० ७४ ७३

Presented by
M.M. Dr. GOPINATH KAVIRAJ
SUKHADA SUNDARI

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

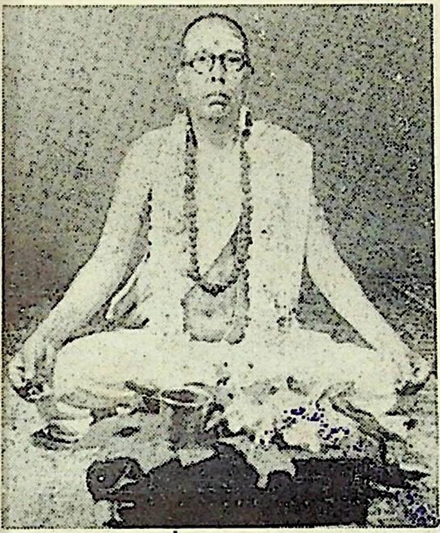

श्री शक्ति गीताञ्जलि के
रचयिता
हमारे—
पूज्य गुरुदेव
साहित्य महोपाध्याय
आशुकवि कविभूषण
आम्नायधुरंधर महोपदेशक
आगमरत्न
पं० श्रीहरि शास्त्री जी
महाराज, जयपुर।

श्री शक्ति गीताञ्जलि के
प्रकाशक
गोपाल लाल माथुर (नाग)
चाकसू वाला
नायब तहसीलदार, फागी
जयपुर (राजस्थान)

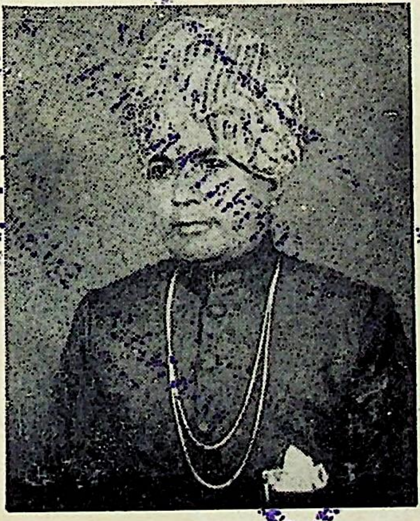

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशक का आवेदन

प्रिय पाठक महानुभाव !

श्रीमान् पूज्यपाद पं० श्रीहरि शास्त्री जी महाराज एक स्वतत्र प्रतिभा सम्पन्न कविभूषण तथा श्रेष्ठविद्वान् हैं। इनका परिचय करना मैं तो सूर्य को दीपक दिखाकर परिचय कराने जैसा समझता हूँ। राजस्थान के ये गण्य मान्य विद्वानों में हैं, महान् कवि हैं। संस्कृत तथा हिन्दी, दोनों भाषाओं में ही इनकी प्रतिभा सफल और उपयुक्त तथा मनोहर कविता (रचना) करती है। संस्कृत साहित्य में आपकी ख्याति विशेष है। अन्य अन्य विषयों जैसे कर्मकाण्ड, तन्त्र, मन्त्र, दर्शन, स्मृति, पुराण, व्याकरणादि में भी आपका अगाध ज्ञान है। जिसका प्रवचन करते हैं उस विषय को परिपूर्ण हृदयङ्गम करा देते हैं। प्रवक्ता भी पूरे प्रसिद्ध हैं। भारत की और राजस्थान की अनेक संस्थाओं ने आपको समय-समय पर अनेक पदों, उपाधियों से विभूषित किया है। आपकी लेखनी से कई ग्रन्थ लिखे गये हैं। कुछ (७-८) मुद्रित भी हो चुके हैं। अन्य (कई) मुद्रण के लिये तैयार हैं। अस्तु।

मैंने पूज्य शास्त्री जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की है। मेरे मनोरथ आपकी कृपा दृष्टि से सफल होते आये हैं। मैंने एक बार गुरुदेव से प्रार्थना की थी कि गुरुदेव ! अपने शक्ति महिमा में प्रायः सत्संग तथा उत्सवों में भजन गायन करते कराते हैं तब गायक लोग राम कृष्णादि के पद भजन ही विशेष बोलते हैं, शक्ति सत्ता तथा पराम्बा श्री महामाया भवानी के भजन कम ही देखने सुनने में आते हैं। हां, जोधपुर, उदयपुर, जयपुरतथा अन्यत्रभी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कायस्थों के मण्डल तथा कुछ और भी विरले ही जनों के लिखे देशी भाषा में पुरानी तरज के कुछ २ भजन मिलते हैं। पर वे साधारण पढ़े-लिखे भक्तों के उद्‌गार देशी भाषा में ही हैं। विशुद्ध नागरी तथा राजस्थानी में नहीं है और कोई शास्त्रीय तथा शाक्त सिद्धान्तों को प्रतिपादन करते हुए सिद्ध सारस्वत कवियों की शैली पर नहीं है।

इस बात को सुनकर पूज्य शास्त्री जी महाराज ने ५-७ मिनट विचार के बाद अपनी पुस्तकों में से १ कापी लिखित मुझे दिखाई। मैंने उसे देखा, उसमें करीब ७५ भजन शक्ति महिमा पर आगम सिद्धान्त प्रतिपादन करते हुए अनेक राग-रागिनियों में लिखे हैं। मैंने यह कापी पढ़ने को मांग ली और घर लेजा कर धीरे २ सब को पढ़ा। मुझे बहुत आश्वासन मिला और पूज्य गुरुदेव श्री शास्त्री जी में मेरी श्रद्धा अटूट हो गई।

फिर एक बार दर्शन के लिए गुरु चरणों तक पहुँचा और विनय की कि इन भजनों को सुचारु रूप से लिखा देने की कृपा करें तो इनका प्रकाशन करने की चेष्टा की जाय। पूज्य गुरुदेव ने कुछ ही दिनों में इसे प्रेस कापी के रूप में परिणत कर लिया। यह बात ५ वर्ष पूर्व की है।

भगवती की कृपा जब जैसा करने कराने की होती है तब ही उस कार्य के होने का संयोग और सुविधाएं प्राप्त होती हैं। मैं यथार्थ कहता हूँ कि गुरु महाराज से इसके प्रकाशन की आज्ञा प्राप्त किये भी आज चौथा वर्ष है पर मुझे सर्विस की परिस्थिति, परिवर्तनादि के कारण समय प्राप्त न होते-होते इतना विलम्ब हो ही गया।

अब आज मैं पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने पहुँचा। प्रणाम कर पहले यही आशीर्वाद मांगा कि इस पुस्तक को मैं अभी प्रेस

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में देने जा रहा हूँ आशीर्वाद दीजिये। गुरुदेव ने मुस्कराते हुए शुभाशीर्वाद दिया, आज प्रकाशन के लिए दे दी है।

इसका नाम शक्ति गीताञ्जलि है। इसमें श्री गणपति स्तुति और गुरु महिमा के पदों से आरम्भ कर सभी भजन पद राग रागिनियों में भगवती महामाया दुर्गा, भवानी, विश्वेश्वरी,जगदम्बा की महिमा के द्योतक हैं। इससे शाक्त वन्धुओं को बहुत लाभ होगा। यह मेरा अनुभव है कि जब-जब पूजा मंडल तथा उत्सव विशेष पर तथा प्रसंगवश भी कभो कहीं इसके भजन जिनने सुने सुनाए हैं उन सबने ही इसके भजनों की तथा रचना और सिद्धान्तों की खूब ही प्रशंसाएं की हैं।

भजनों की रचना मर्यादित तथा साहित्य सम्पत्ति पूर्ण हैं। प्रसाद गुण तो सर्वत्र ही है। भाषा नागरी है। कहीं कोई भजन देशी भाषा में भी है, पर विशेष हिन्दी भाषा में ही है। इनकी प्रशस्ति लिखना नहीं चाहते हैं, पुस्तक आपके हाथ में है, कृपया पूरी पढ़िये और समझने की चेष्टा कीजिये, बड़ी शान्ति, सुख, भक्ति भाव, अम्बा महामाया का दिव्य प्रभाव अनुभव में आने लगेगा। क्योंकि इसमें निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

कहीं तो आपको प्रार्थनाएं मिलेंगी, कहीं कारुण्य भाव, कहीं दार्शनिक विचारों से शक्ति का निरुपण, कहीं सगुण उपासना, कहीं मूर्ति माधुर्य, कहीं पूजा प्रकार, कहीं मानसी (भाव) पूजा कहीं योग बर्णन में शक्ति की सत्ता, कहीं उपदेश, कहीं यन्त्र विधान, कहीं मन्त्र प्रकाशन और कहीं भगवती के स्वरूप तथा शृंगार का वर्णन सुचारू रूप से साहित्य की शैली पर निरूपित हुवा मिलेगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैंने इसकी ऐसी विशेषताओं पर ही इस पुस्तक का प्रकाशन करना कर्तव्य समझा है। आशा है सभी शाक्त बन्धु इससे लाभ उठावेंगे। और इसका भगवती की भक्ति भावना के सुप्रचार में सत्संग कीर्तनादि के अवसरों पर इन भजनों को संगीतज्ञों के द्वारा गायनों में प्रसारित कर हमारे प्रकाशन के श्रम और उत्साह को वढ़ावेंगे।

जय श्री जगदम्बा की

भवदीय

गोपाललाल माथुर "नाग" चाकसू वाला

जयपुर।

॥ श्री ॥

जयपुर के कल्याणबक्ष जी माथुर के घर जन्म लिया।
मुंशी प्यारेलाल चाकसू कानूगो ने गोद किया।
अब नायब तहसीलदार फागी में जन सुखदाई हैं।
उस गोपाललाल माथुर ने यह पुस्तक छपवाई है॥ १॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशक का आवेदन

प्रिय पाठक महानुभाव !

श्रीमान् पूज्यपाद पं० श्रीहरि शास्त्री जी महाराज एक स्वतत्र प्रतिभा सम्पन्न कविभूषण तथा श्रेष्ठविद्वान् हैं। इनका परिचय करना मैं तो सूर्य को दीपक दिखाकर परिचय कराने जैसा समझता हूँ। राजस्थान के ये गण्य मान्य विद्वानों में हैं, महान् कवि हैं। संस्कृत तथा हिन्दी, दोनों भाषाओं में ही इनकी प्रतिभा सफल और उपयुक्त तथा मनोहर कविता (रचना) करती है। संस्कृत साहित्य में आपकी ख्याति विशेष है। अन्थ अन्य विषयों जैसे कर्मकाण्ड, तन्त्र, मन्त्र, दर्शन, स्मृति, पुराण, व्याकरणादि में भी आपका अगाध ज्ञान है। जिसका प्रवचन करते हैं उस विषय को परिपूर्ण हृदयङ्गम करा देते हैं। प्रवक्ता भी पूरे प्रसिद्ध हैं। भारत की और राजस्थान की अनेक संस्थाओं ने आपको समय-समय पर अनेक पदों, उपाधियों से विभूषित किया है। आपकी लेखनी से कई ग्रन्थ लिखे गये हैं। कुछ (७–८) मुद्रित भी हो चुके हैं। अन्य (कई) मुद्रण के लिये तैयार हैं। अस्तु।

मैंने पूज्य शास्त्री जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की है। मेरे मनोरथ आपकी कृपा दृष्टि से सफल होते आये हैं। मैंने एक बार गुरुदेव से प्रार्थना की थी कि गुरुदेव ! अपने शक्ति महिमा में प्रायः सत्संग तथा उत्सवों में भजन गायन करते कराते हैं तब गायक लोग राम कृष्णादि के पद भजन ही विशेष बोलते हैं, शक्ति सत्ता तथा पराम्बा श्री महामाया भवानी के भजन कम ही देखने सुनने में आते हैं। हां,जोधपुर, उदयपुर, जयपुरतथा अन्यत्रभी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कायस्थों के मण्डल तथा कुछ और भी विरले ही जनों के लिखे देशी भाषा में पुरानी तरज के कुछ २ भजन मिलते हैं। पर वे साधारण पढ़े-लिखे भक्तों के उद्‌गार देशी भाषा में ही हैं। विशुद्ध नागरी तथा राजस्थानी में नहीं है और कोई शास्त्रीय तथा शाक्त सिद्धान्तों को प्रतिपादन करते हुए सिद्ध सारस्वत कवियों की शैली पर नहीं है।

इस बात को सुनकर पूज्य शास्त्री जी महाराज ने ५–७ मिनट विचार के बाद अपनी पुस्तकों में से १ कापी लिखित मुझे दिखाई। मैंने उसे देखा, उसमें करीब ७५ भजन शक्ति महिमा पर आगम सिद्धान्त प्रतिपादन करते हुए अनेक राग-रागिनियों में लिखे हैं। मैंने यह कापी पढ़ने को मांग ली और घर लेजा कर धीरे २ सब को पढ़ा। मुझे बहुत आश्वासन मिला और पूज्य गुरुदेव श्री शास्त्री जी में मेरी श्रद्धा अटूट हो गई।

फिर एक बार दर्शन के लिए गुरु चरणों तक पहुँचा और विनय की कि इन भजनों को सुचारु रूप से लिखा देने की कृपा करें तो इनका प्रकाशन करने की चेष्टा की जाय। पूज्य गुरुदेव ने कुछ ही दिनों में इसे प्रेस कापी के रूप में परिणत कर लिया। यह बात ५ वर्ष पूर्व की है।

भगवती की कृपा जब जैसा करने कराने की होती है तब ही उस कार्य के होने का संयोग और सुविधाएं प्राप्त होती हैं। मैं यथार्थ कहता हूँ कि गुरु महाराज से इसके प्रकाशन की आज्ञा प्राप्त किये भी आज चौथा वर्ष है पर मुझे सर्विस की परिस्थिति, परिवर्तनादि के कारण समय प्राप्त न होते-होते इतना विलम्ब हो ही गया।

अब आज मैं पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने पहुँचा। प्रणाम कर पहले यही आशीर्वाद मांगा कि इस पुस्तक को मैं अभी प्रेस

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में देने जा रहा हूँ आशीर्वाद दीजिये। गुरुदेव ने मुस्कराते हुए शुभाशीर्वाद दिया, आज प्रकाशन के लिए दे दी है।

इसका नाम शक्ति गीताञ्जलि है। इसमें श्री गणपति स्तुति और गुरु महिमा के पदों से आरम्भ कर सभी भजन पद राग रागिनियों में भगवती महामाया दुर्गा, भवानी, विश्वेश्वरी,जगदम्बा की महिमा के द्योतक हैं। इससे शाक्त बन्धुओं को बहुत लाभ होगा। यह मेरा अनुभव है कि जब-जब पूजा मंडल तथा उत्सव विशेष पर तथा प्रसंगवश भी कभी कहीं इसके भजन जिनने सुने सुनाए हैं उन सबने ही इसके भजनों की तथा रचना और सिद्धान्तों की खूब ही प्रशंसाएं की हैं।

भजनों की रचना मर्यादित तथा साहित्य सम्पत्ति पूर्ण हैं। प्रसाद गुण तो सर्वत्र ही है। भाषा नागरी है। कहीं कोई भजन देशी भाषा में भी है, पर विशेष हिन्दी भाषा में ही है। इनकी प्रशस्ति लिखना नहीं चाहते हैं, पुस्तक आपके हाथ में है, कृपया पूरी पढ़िये और समझने की चेष्टा कीजिये, बड़ी शान्ति, सुख, भक्ति भाव, अम्बा महामाया का दिव्य प्रभाव अनुभव में आने लगेगा। क्योंकि इसमें निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

कहीं तो आपको प्रार्थनाएं मिलेंगी, कहीं कारुण्य भाव, कहीं दार्शनिक विचारों से शक्ति का निरुपण, कहीं सगुण उपासना, कहीं मूर्ति माधुर्य, कहीं पूजा प्रकार, कहीं मानसी (भाव) पूजा कहीं योग वर्णन में शक्ति की सत्ता, कहीं उपदेश, कहीं यन्त्र विधान, कहीं मन्त्र प्रकाशन और कहीं भगवती के स्वरूप तथा शृंगार का वर्णन सुचारू रूप से साहित्य की शैली पर निरूपित हुवा मिलेगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैंने इसकी ऐसी विशेषताओं पर ही इस पुस्तक का प्रकाशन करना कर्तव्य समझा है। आशा है सभी शाक्त बन्धु इससे लाभ उठावेंगे। और इसका भगवती की भक्ति भावना के सुप्रचार में सत्संग कीर्तनादि के अवसरों पर इन भजनों को संगीतज्ञों के द्वारा गायनों में प्रसारित कर हमारे प्रकाशन के श्रम और उत्साह को बढ़ावेंगे।

जय श्री जगदम्बा की

भवदीय

गोपाललाल माथुर "नाग" चाकसू वाला

जयपुर।

॥ श्री ॥

जयपुर के कल्याणबक्स जी माथुर के घर जन्म लिया।
मुंशी प्यारेलाल चाकसू कानूगो ने गोद किया।
अब नायब तहसीलदार फागी में जन सुखदाई हैं।
उस गोपाललाल माथुर ने यह पुस्तक छपवाई है॥ १॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ श्रीः ॥

※ शक्ति—संकीर्तन के पद ※

१—शिवे दुर्गे शिवे दुर्गे, दुर्गे दुर्गे शिवे शिवे ।
उमे रमे भवानि श्री भवानि श्रीः उमे रमे ॥ १ ॥

२—१-दुर्गे दुर्गतिहारिणि जय जय ।
२-शिवे सर्वसुखकारिणि जय जय ।
३-कालि काल संहारिणि जय जय ।
४-उमे अमृत-गतिदायिनि जय जय ।
५-विजये विजय-विधायिनि जय जय ।
६-माये मङ्गलदायिनि जय जय ।
७-पार्वति पाप विदारिणि जय जथ ।
८--भुवनेश्वरी भय-हारिणि जय जय ।

३—ओं शक्ति, ओं शक्ति, ओं शक्ति ओम् ।
ऐं शक्ति ऐं शक्ति ऐं शक्ति ओम् ।
ह्रीं शक्ति ह्रीं शक्ति ह्रीं शक्ति ओम् ।
क्लीं शक्ति क्लीं शक्ति क्लीं शक्ति ओम् ।
क्रीं शक्ति क्रीं शक्ति क्रीं शक्ति ओम् ।
ब्रह्म शक्ति विष्णु शक्ति शिव शक्ति ओम् ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

४—जय मा, जय मा, जय जय मा ।
महाकालि, महालक्ष्मी मा ।
महा सरस्वति माये, मा ।
जय दुर्गे जगदीश्वरि मा ।
चामुण्डे चिद्रूपिणि मा ।
विद्ये संविद्रूपिणि मा ।
नारायणि नररूपिणि मा ।
ब्राह्मी वैष्णवि शाम्भवि मा ।

५—जय शिव जय शिव जय शिव मा ।
जय राम जय राम जय जय मा ।
माधव कृष्ण मुरारे मा ।
शिव शंकर त्रिपुरारे मा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ श्री : ॥

श्री गणपति स्तुति नं० १

गज मुख सुख कारिन् नमो नमो, गजमुख० ॥टेर॥
एकरदन रुचिमदन विनायक
बुद्धिसदन भव कदन विधायक,
पाणिषु चाहवलय कमलांकुश मोदक धारिन्
नमो नमो गजमुख ॥ १ ॥
दुरितहरण सद्बोधकरण हे
धूमध्वज मूषकविचरण हे
सिन्दूरारुण रुचिरालिक शशिभूषण धारिन्
नमो नमो गजमुख ॥ २ ॥
ऋद्धिसिद्धियुत शंकर सुत हे !
गिरिजानन्दन मुनिजन नुत हे !
श्री हरि वाञ्छित पूरणकर्मणि, विघ्नविदारिन्
नमो नमो गजमुख ॥ ३ ॥

गणपति स्तुति नं० २

उठ प्रभात श्रीगणेश श्रीगणेश गावे
विघ्नजाल दूर होय सम्पत घर आवे । उठ प्रभात० ॥१॥
लम्बोदर एकदन्त विकट विघ्नहारी
भालचन्द्र गौरीसुत मूषक है सवारी
चक्र तुण्ड भक्तकाम पूरण कहलावे । उठ प्रभात० ॥२॥
सुन्दर सिन्दूर पूर अरुण विभा राजै ।
देख जिसे उदित बाल सूर्यबिम्ब लाजै ॥
चार भुजा कल्पलता जैसी मन भावै । उठ प्रभात० ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाशांकुश अक्षमाल मोदक मनहारी
बुद्धिप्रद प्रथम पूज्य सेवक सुखकारी
श्रीहरि गजवदन सुमिर सब सुख सरसावे। उठ प्रभात ॥४॥

(राग हम्मीर तिताला)

गुरु पद–रज की बलिहारी नं० ३

जिनको स्पर्श मात्र कर भव से तर जावे नर नारी।
श्री गुरु का उपदेश तुरत ही हरता है भ्रम भारी ॥
श्री गुरु० ॥ १ ॥

उठ प्रभात श्री गुरु पद वन्दन करते हैं नर नारी।
उनको श्रेयमयी है सब दिन, पल पल मंगलकारी ॥
श्री गुरु० ॥ २ ॥

गुरु शिव रूप कृपा के सागर, शिष्य संघ हितकारी।
गुरु ब्रह्मा है गुरु विश्वम्भर गुरु है पर उपकारी ॥
श्री गुरु० ॥ ३ ॥

गुरु पद कमल पराग शिष्य के मानस मल परिहारी।
श्री गुरु नाम जाप से 'हरि' ने दिव्य ज्योति उर धारी ॥
श्री गुरु ॥ ४ ॥

(सारंग)

राग हुज़ाज ताल दीपक की नं० ४

प्रथम गुरु पद में चित्त लगाऊँ।

शूली ऊपर बनी बावड़ी ऊपर कूप छै पाऊँ।
उन पर नगरी बसी, वहाँ मैं गुरु दर्शन हित जाऊँ ॥
प्रथम गुरु ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उस नगरी में गंगा बहती मन को वहाँ न्हवाऊँ ।
गंगा बीच सरोज सहस्रदल आसन वहां बिछाऊँ ॥
प्रथम गुरु० ॥ २ ॥
शक्ति सहित गुरुवर को उस पर प्रेम मगन बैठाऊँ ।
गौरी शंकर रूप समझ कर पल पल शीश नवाऊँ ॥
प्रथम गुरु० ॥ ३ ॥
मानस भाव भरी पूजा कर मस्तक भेंट चढ़ाऊँ ।
पद पंकज से झरी सुधा की धारा तनु पर लाऊँ ॥
प्रथम गुरु० ॥ ४ ॥
पावन हुई देह धारण कर मंगल मोद मनाऊँ ।
गुरु के वचन सुधा पी पी 'हरि' मनको मस्त बनाऊँ ॥
प्रथम गुरु० ॥ ५ ॥

राग काफी ताल दीपचन्दी नं० ५

आज गुरुवर घर आये ।

धन्य घड़ी यह धन्य दिवस है सोते भाग जगाये ।
प्रगटाये प्राचीन पुण्य सब पातक पुंज नसाये ॥
दोष सब दूर दूराये ॥ आज गुरु० ॥१॥
दृग् ने वन्दन माल बीच निज पलक के पात बंधाये ।
बहा प्रेम जल शीतल धारा गुरु के चरण धुलाये ॥
हृदय के आसन छाये ॥ आज गुरु ॥२॥
रोम रोम हर्षित हो तनु में फूले नहीं समाये ।
मुख ने मधुर मुसकुराहट के मृदुल फूल बरसाए ॥
पाणि पल्लव सरसाये ॥ आज गुरु० ॥३॥
चेतन के चन्दन अर्पण कर स्नेह के दीप जलाये ।
अहंकार कपूर जलाया भाव के भोग लगाये ॥
निछावर प्राण घुमाये ॥ आज गुरु० ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब इन्द्रियां हर्ष में फूलीं मंगल साज सजाये ।
मन प्रमोद से मस्त हुआ है निश्चल ध्यान जमाये ॥
अलौकिक, आनन्द पाये ॥ आज गुरु० ॥५॥
वाणी गद्-गद् हुई प्रेम में गुरुवर के गुण गाये ।
करतल ताल संग में श्री हरि, भक्ति के वाद्य बजाये ॥
जनम के शुभ फल पाये ॥ आज गुरु० ॥५॥

राग काफी तिताला नं० ६

गुरु ने अद्भुत खेल दिखाया ।
करुणा भरी दृष्टि से देखा तन का ताप नसाया ॥
जग की झंझट दूर करी झट मानस विमल बनाया ॥१॥
शिर पर हस्त कमल रखते ही रोम रोम हर्षाया ।
निर्मल नाड़ी वृन्द हुआ मारुत ने वेग बढ़ाया ॥ गुरु ने० ॥२॥
बांह पकड़ छाती से लगाया तब जो आनन्द आया ।
उसका वर्णन हरिहर से भी जा नहीं सकता गाया ॥३॥
एक कान में फूँक मात्र दे सारा भेद मिटाया ।
तत्त्व दृष्टिसे लगा दीखने आनन्द उर न समाया ॥ गुरु ने०॥४॥
फिर उपदेश सुधारस मुझको करके कृपा पिलाया ।
जिससे ज्योति जगी वह मनमें जग कारण दरसाया ॥गुरु०॥५॥
मैंने उसमें भी अपने को आप रूप में पाया ।
सप्तपुरी में क्रम से घूमा, नौ नदियों में नहाया ॥ गुरु ने ॥६॥
कुछ ही क्षण में मेरे ऊपर वह अद्वय रस छाया ।
मैं को भूल गया हरि मुझ में, मेरा पता न पाया ॥ गुरु ने ॥७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(सरस्वती प्रार्थना)

राग भैरवी तिताला नं० ७

जय जय भारति वीणा धारिणि ।
जय शारदे सर्व सुख कारिणि ॥टेर॥
विनय सुनो मां बुद्धि बढ़ावो,
हमें समुन्नति शिखर चढ़ाओ ।
सत्य धर्म का पाठ पढ़ाओ,
विद्या दो हे ब्रह्म विहारिणि ॥जय जय० ॥१॥
सभी कला व्यवसाय सिखाओ,
सुख के सारे दृश्य दिखाओ ।
जग में सुयश ध्वजा फहराओ,
पटुता दो हे पुस्तक धारिणि ॥ जय जय० ॥२॥
हम नरनारी महिमा पावें,
शिव से वीर पुत्र प्रकटावें ।
सद् ग्रहस्थ का धर्म निभावें,
संपत दो हे सुख संचारिणि ॥जय जय ॥३॥
तुम गायत्री उमा रमा हो,
सावित्री जानकी क्षमा हो ।
श्री हरि चरण गहैं सुखराशि,
विद्या वरदो विपद विदारिणि ॥ जय जय ॥४॥

सवैया नं० ८

शुद्ध अशुद्ध किसी विध जाप करो वह ताप हरै ही हरै ।
मूक क्षुधार्त्त कहै न कहै जननी सुत पेट भरै ही भरै ॥
जान अजान किसी विध नाम उचार से दुःख टरै ही टरै ।
पूत कपूत किसी विध हो हरि अम्बा सहाय करै ही करै ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री भैरव स्तवन नं० ९

आदि भैरव नाथ जय हो
श्री सदा शिव रूप हो तुम
देव देव अनूप हो तुम
चार श्रुति है हाथ, जय हो ॥
आदि भैरव नाथ० ॥ १ ॥

भक्त को भव भीति हारी
सर्व सुख कर है तुम्हारी ।
लोक पावन गाथ, जय हो ॥
आदि भैरव नाथ जय हो ॥ २ ॥

साधकों के इष्ट साधक
दण्ड . पाणि विघ्न बाधक
कीजिये रिपु क्वाथ, जय हो ॥
आदि भैरव नाथ जय हो ॥ ३ ॥

भूत भावन क्षेत्रपालक ।
हे बलिप्रिय दिव्य बालक ॥
'हरि' नवावें माथ ॥ जय हो ।
आदि भैरव नाथ जय हो ॥ ४ ॥

दुर्गा-स्तोत्र नं० १०

दोहा—

दुर्गे तू दुख हारिणी, श्रेय कारिणी माय ।
स्तोत्र सुनो संकट हरो, कह श्रीहरि कविराय ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सवैया (मत्त गयन्द)

नाभि-सरोज में बैठे विरिञ्चि को
कैटभ औ मधु चाहेउ मारो,
ध्यान कियो विधि ने प्रगटी तुम
कालि ! मुकुन्द को मोह सँहारो।
जगत ही हरि से दुई दानव
नष्ट करा विधि कष्ट निवारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ १ ॥

देवन के दुखदायि महा
महिषासुर ने निज दम्भ पसारो,
कोप की ज्वाल सुरों की उठी तहँ
आप सहस्र-भुजी तनु धारो ।
संगर में हन सैरिभ को सुर-
सँघहि आप दियो सुख सारो।
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ २ ॥

शुम्भ निशुम्भ ने त्रास दियो
सुर संघ को स्वर्ग ते दूर निकारो,
आय हिमालय पै कर जोर
प्रणाम कियो तब सूक्त उचारो।
निर्भय देवन को तुम कीन्हेउ
शुम्भ निशुम्भ ससैन्य सँहारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भूप सुरत्थ पै भीर पड़ी जब
दौरि सुमेधा के थान सिधारो,
ज्ञान महामुनि ते लहि आपको
कीन्ह तपो व्रत त्याग अहारो।
तुष्ट हुई तुम :से वर ले रिपु
जीति निजी पुनि राज्य संभारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी।
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ४ ॥

वृत्र ने इन्द्र से वैर कियो
सुर राज्य भयो रण हार दुखारो,
चित्त मे आपको ध्यान कियो
स्तुति में करुणामय वैन उचारो !
वारिधि फेन में बैठ भवानि !
तुम्हीं उस दुर्जन वृत्र को मारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी।
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ५ ॥

राजकुमार सुदर्शन पै जब
संकट आन पड्यो अति भारो,
मात समेत रह्यो वन में
पद पंङ्कज में तव प्रेम पसारो।
युद्ध जिताय विवाह कराय
दिवाइके राज्य बनायो सुखारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ६ ॥

सीय वियोग दुखी रघुनायक
अद्रि प्रवर्षण पै पग धारो।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नारद के उपदेश ते आपको
यज्ञ कियो दिन नौ व्रत धारो ।
पाए तुम से वर लंक विनाश के
रावण मार स्वराज्य संभारो ,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ७ ॥

कौरव पाण्डव युद्ध में अर्जुन
कृष्ण से पा उपदेश तुम्हारो,
ध्यान प्रणाम कियो बहुधा
रण जीतन के हित स्तोत्र उचारो
होय प्रसन्न दियो तुमने वर
जीत लियो रण भारत सारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ८ ॥

इन्द्रहि शाप दियो दुर्वासा ने
लुप्त भयो धन वैभव सारो,
सम्पति हीन सुरेश्वर ने जब
पूजेहु पाद सरोज तुम्हारो ।
कीन्हि कृपा तुमने तब श्रा मुनि
ने निज शाप को दोष निवारो ,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ९ ॥

दुःख हरे बहु देवन के तुम
देवि दयावति ! मोहि निहारो ,
सङ्कट मेरो है कौन बड़ो जो
नहीं तुम से यह जात निवारो ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अम्ब ! विलम्ब करो न अभी
सब काटहु कष्ट जो होय हमारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुखः दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥१०॥

श्रीहरि ने यह स्तोत्र बनाय
भवानिहिं पाय सुनायहु सारो,
खोट खरो कुछ भी है दयाव्रति !
भाव भरयो शिशु वाक्य विचारो !
प्रेम से याहि पढ़ें जो सुनै
तुम ताहु को संकट जाल निवारो,
जानत है जगदम्ब ! सभी
दुख दारिद हारण नाम तुम्हारो ॥ ११ ॥

दोहा:—

जय दुर्गे जय चण्डिके, जय अम्बिके भवानि ।
जय त्रिपुरे जय कालिके, जय जय भुवनेशानि ॥
भव्य भावना भक्त में, भरै भवानी भूरि ।
करता है यह प्रार्थना, कवि भूषण हरि सूरि ॥

गज़ल कव्वाली भैरवी (कहरवा) नं० ११

जगत की आपदाएं सब निवारेगी जगन्माता ।
दयामय दृष्टि से इसको, निहारेगी जगन्माता ॥ टेर ॥ १

हिमालय पै प्रगट होकर, सुरों को जो सुनाई थी,
प्रतिज्ञा वह कभी उसको, न टारैगी जगन्माता ॥२॥

हटाया था महिष खल के, महा उद्दम्भ को जैसे,
तुम्हारे दुःख भी वैसे, निवारेगी जगन्माता ॥३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वही अव्याज करुणा की, महा गम्भीर सागर है,
वही इस विश्व पर करुणा, विचारेगी जगन्माता ।।४।।
वही विद्या अजन्मा है, वही है चेतना सब की,
अगुण भी वह सगुण ही देह धारेगी जगन्माता ।।५।।
जरा यह बात तो सोचो, अपन सन्तान हैं उसकी,
तो फिर सुधि पुत्रों की कैसे विसारेगी जगन्माता ।।६।।
स्वभक्तों को दुःखी देखे, नहीं उससे रहा जाता,
अभी 'हरि' दर विराजित हो पधारेगी जगन्माता ।।७।।

भजन नं० १२

अए जगदम्बिके मुझको तुम्हारा ही सहारा है।
तुम्ही में दिख रहा मुझको, चराचर विश्व सारा है ।।टेर।। १
सच्चिदानन्द रूपा भी, अजन्मा और निर्गुण भी,
तुम्हीं ने धर्म रखने को सगुण आकार धारा है ।।२।।
धरा पर दानवों से जब, हुईं उत्पन्न बाधाएँ,
त्रिदश द्विज धेनुओं का तब तुम्हींने दुख निवारा है ।।३।।
तुम्हारी दिव्य महिमा का, महाबल और करुणा का,
न पाया पार गा-गा कर विचारा शेष हारा है ।।४।।
तुम्हीं काली, तुम्हीं बगला, तुम्हीं भुवनेश्वरी छिन्ना,
तुम्हीं त्रिपुरा, सुमातंगी, तुम्हारा नाम तारा है ।।५।।
तुम्हीं हो भैरवी, दुर्गा, तुम्हीं धूमावती, कमला,
तुम्हीं ने अंश अंशों से किया जग व्याप्त सारा है ।।६।।
तुम्हीं परतत्त्व रूपा हो, जगन्माता अनूपा हो,
तुम्हें ही वेद गाते हैं यही 'हरि' ने विचारा है ।।७।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कव्वाली (ताल दादरा) नं० १३

ध्येय तुही तुझ से मेरा ध्यान न जाने पावे ।
ज्ञेय तुही तुझ से मेरा ज्ञान न जाने पावे ॥१॥ टेर

एरी जगदम्ब मेरा और तो कुछ भी हो पर,
तनु से तेरे ध्यान बिना प्राण न जाने पावे ॥२॥

लोक अपमान करैं या करैं प्रशंसा ही,
पर मैं तेरा हूँ यह पहचान न जाने पावे ॥३॥

सृष्टि परमाणु से जो ब्रह्म तक विचित्र रची,
इससे किसी क्षण भी तेरा भान न जाने पावे ॥४॥

हूँ जो कुछ मैं ही यहाँ यह जो पद तुम्हारा है,
अन्त तक इसकी कभी तान न जाने पावे ॥५॥

तार मुझे या न तार जग से कोई फिक्र नहीं,
तारे ! तेरे नाम का यह मान न जाने पावे ॥६॥

झंझटें कुछ भी हों संसार में रहूँ जब तक,
मुख से तेरा नाम या गुण गान न जाने पावे ॥७॥

लाख करो वाद कोई, शक्ति ब्रह्म भिन्न नहीं,
बस इस अद्वैत का अवधान न जाने पावे ॥८॥

'हरि' की विनय यही बार बार हे मातः !
इन में वृथा एक भी वरदान न जाने पावे ॥९॥

कव्वाली (ताल दादरा) नं० १४

विश्व का शक्ति विना और कोई निदान नहीं ।
प्रकृति विना और जगत् जीवों का निधान नहीं ॥१॥
देखलो सूर्य, शशि, अग्नि, मरुत, पृथ्वी, जल,
जिसमें यह हो न कहीं ऐसा कोई स्थान नहीं ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छोड़ के झंझटें सब तुम ही बतादो हम को।
आदि शक्ति का चराचर में किसे ध्यान नहीं ॥३॥

लोक में सत्य उदाहरण यही समझ देखो।
बिना तलवार किसी काम का ही म्यान नहीं ॥४॥

सृष्टि परमाणु से जो विष्णु तथा ब्रह्म तक।
देखलो कोई बिना शक्ति के शक्तिमान नहीं ॥५॥

कहते यही सांख्य वेदान्त बनाने वाले।
तत्त्व दर्शन में बिना जिनके कोई प्रमाण नहीं ॥६॥

शक्ति बिना ब्रह्म नहीं भिन्न न यह है इससे।
जैसे प्रभा शून्य कहीं भानु प्रभावान नहीं ॥७॥

और जो हठ से भरे लोग कोई निदान कहें।
हे 'हरि' वे वाद करैं व्यर्थ, उन्हें ज्ञान नहीं ॥८॥

नवार्ण मन्त्र प्रकाश गीतिका न० १५

(गजल कव्वाली ताल कहरवा)

ओंकार आदि मन्त्रों की ईश्वरी तुमहीं हो।
ऐं अम्ब ! अर्धमात्रा शिर पर धरी तुम्हीं हो ॥१॥

ह्रीं शून्य रूप वाली मेधा दया क्षमा हो।
क्लीं बिन्दु नादिनो हो कामेश्वरी रमा हो ॥२॥

चाम्पेय गौर आभायुत देह धारिणी हो।
मुण्डादि दानवों की प्राणापहारिणी हो ॥३॥

डाढ़ैं कराल धरती तुम उग्र कालिका हो।
यै सी विभक्ति रूपी तुम शब्द पालिका हो ॥४॥

विद्या तुम्हीं परा हो आनन्दकारिणी हो।
चेतन हो हरिहरादिक के नाम धारिणी हो ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम को सभी चराचर दिन रात ध्या रहें हैं ।
हैं धन्य जो तुम्हारे गुण गान गा रहे हैं ॥६॥

गजल कव्वाली 'ताल कहरवा' न० १६

जो न मां का भक्त वह सन्तान क्या कुछ भी नहीं ।
चित्त स्थिर जिसमें न हो वह ध्यान क्या कुछ भी नहीं ॥१॥
अम्बिका के दिव्यगुण वा नाम ध्वनि जिनसे कभी ।
प्रेम पूर्व सुनी न हो, वे कान क्या कुछ भी नहीं ॥२॥
भक्ति पूर्वक " अम्बिकार्पणमस्तु" यों बोले विना ।
जो दिया करते पुरुष वह दान क्या कुछ भी नहीं ॥३॥
राग हो रमणीय स्वर हो ताल हो पर आपका ।
नाम गुण जिसमें न हो वह गान क्या कुछ भी नहीं ॥४॥
आपके अर्पण बिना जगदम्ब इस संसार में ।
मानवों के खान अथवा पान क्या कुछ भी नहीं ॥५॥
ब्रह्ममय निर्गुण परात्पर तत्त्व जिससे आपका ।
जान पड़ता है नहीं वह ज्ञान क्या कुछ भी नहीं ॥६॥
आपके सद्भक्त जन या, आप की प्रतिमा जहां ।
हो नहीं गुण गान भी वह स्थान क्या कुछ भी नहीं ॥७॥
शक्ति को परब्रह्म से हरि भिन्न जो नर मानता ।
वह पढ़ा हो शास्त्र पर मतिमान क्या कुछ भी नहीं ॥८॥

ग़ज़ल कव्वाली (कहरवा) न० १७

मां तुम्हारे प्रेम का जिसके हृदय में स्थान है ।
धन्य है वह नर, वही सब गुण गुणों की खान है ॥१॥
लोक में मानव वही, सच्ची तपस्या कर रहा ।
मन्त्र जप करते जिसे मन में तुम्हारा ध्यान है ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तत्त्वदर्शी विज्ञ साधक है वही संसार में ।
जिस पुरुष के मुख कमल में आपका गुण गान है ॥३॥

मुक्त हैं वे साधु जन जीते हुए भी लोक में ।
जो तुम्हारे ब्रह्ममय अद्वैत के विद्वान हैं ॥४॥

एक क्षण भी आपको जिस पर दया मय दृष्टि हो ।
लोग ही क्या देव भी देते उसी को मान हैं ॥५॥

वे अमर हैं अम्बिका गौरी शिवा इत्यादि जो ।
आपके शुभ नाम मय करते सुधरा का पान हैं ॥६॥

ब्रह्म तुमही हो स्वयं तुम से परै कुछ भी नहीं ।
जानता यह जो वही ब्रह्मज्ञ ब्रह्म समान है ॥७॥

अश्वमेधादिक अनेकों यज्ञ करता है वही ।
जो तुम्हारी कर रहा पूजा तथा बलिदान है । ॥८॥

विष्णु विधि शिव से लगाकर सृष्टि में परमाणु तक ।
देखता है 'हरि' जहां बस आप ही का भान है ॥९॥

गजल कव्वाली न० १८

बड़ा विश्वास है दुर्गे मुझे तुम ही निभाओगी ।
जगत को भक्त वत्सलता तुरत तुम ही दिखाओगी ॥१॥

करुं कर्त्तव्य पालन मैं सदा, मर्याद में रह कर ।
यही सिद्धान्त मेरे दृढ़ हृदय में तुम जचाओगी ॥२॥

अनेकों वासनाओं की उछलती सी लहरियों को ।
मिटाकर इस हृदय सर में तुम्हीं मां शान्ति लाओगी ॥३॥

मुझे कोमल तुम्हारे इन अरुण चरणारविन्दों का ।
निरन्तर लीन मनवाला मधुप तुम ही बनाओगी ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनेकों वेद वाक्यों में तथा स्मृतियों पुराणों में ।
फंसे मुझको दया करके सुपथ में तुम लगाओगी ॥५॥
कई उद्योग कर बैठा न हटते शत्रु कामादिक ।
दिनों-दिन बढ़ रहे हैं मां इन्हें तुम ही भगाओगी ॥६॥
सदा गुण गान गाता ही रहूं माता तुम्हारे मैं ।
अनूठी कल्पना प्रतिभा मुझे तुम ही दिलाओगी ॥७॥
निरख मेरे कुकर्मों को ढकै जो देव आखों को ।
मुझे सप्रेम अपनाती उन्हें नीचा दिखाओगी ॥८॥
निरन्तर मोह निद्रा के विवश होते हुए 'हरि' को ।
सुना विज्ञान की तानें तुरत तुम ही जगाओगी ॥९॥

कहरवा न० १९

अब तो निहार मुझको करुणा निधान काली ।
भव से उबार मुझ को करुणा निधान काली ॥१॥
अब तक गंवा रहा था मैं तो सभी समय को ।
खल संग खेलने के कर कर विचार खाली ॥२॥
प्राचीन पुण्य से अब गुरु ने सुपथ बताया ।
अब प्रेम पूर्ण होकर तेरी उपासना ली ॥३॥
श्रुतियां पुराण स्मृतियां इतिहास काव्य बांचे ।
सब ही बता रहें हैं शक्ति प्रभाव शाली ॥४॥
जिसका समस्त श्रुतियां निर्णय न कर सकी हैं ।
परतत्त्व तुम वही हो व्यापक स्वभाव वाली ॥५॥
सर्गादि में तुन्हीं ने दे मोह नींद 'हरि' को ।
जड़ सा बना दिया था सब चेतना उड़ा ली ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मधु और दैत्य कैटभ पायोधि बीच आये ।
पंकज में बैठे विधि पै वध हेतु दृष्टि डाली ॥७॥
वहुधा जगाने पर भी माधव न जगा पाये ।
दुःखी हो पद्म भू ने तुम को शरण बनाली ॥८॥
स्तुति से प्रसन्न होकर हरि को जाग उसीसे ।
उन दोनों दानवों की गर्दन तुरत कटाली ॥९॥
यों आप की कृपा के कण का प्रसाद पाकर ।
मधु कैटभारि हरि ने प्रख्याति पूर्ण पाली ॥ १० ॥
मैं क्या कहूँ भवानी महिमा अनन्त ही है ।
कह शेष भी न सकते जिह्वा सहस्र शाली ॥ ११ ॥
करुणा कटाक्ष कारिए इस दीन दास पर भी ।
हरि की विनय यही है ए मुण्ड माल वाली ॥ १२ ॥

"राग सारंग" नं० २०

माया नहीं किसी ने जानी ॥
योग युक्तियां करके पच पच हारे सारे ज्ञानी ।
इसमें रुचि अनुरूप जनों ने कई कल्पना ठानी ॥ माया०॥१॥
ब्रह्मा विष्णु आदि देवों ने भी यह बात बखानी ।
जिस पर इसकी दया हुई बस उसने ही पहचानी ॥ माया०॥२॥
कोई इसको जड़ बतलाते वेदान्ती भ्रम ज्ञानी ।
कहते इसे अविद्या कोई विद्या के अभिमानी ॥ माया०॥३॥
और किसी ने उपाधि अथवा भ्रान्तिरूप से जानी ।
इससे मदकर भोगी सबने भुक्ति मुक्ति की दानी ॥ माया०॥४॥
इससे मदकर ऋषि नारद भी हुए राज की रानी ।
पाया पूर्ण गृहस्थ दुःख निज विद्या सभी भुलानी ॥ माया०॥५॥
विश्व चराचर माया जिसमें माया वही बखानी ।
वह चेतन आनन्द रूप है सत् है आदि भवानी ॥ माया०॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिसने ज्ञान शास्त्र पढ़कर भी इसे नहीं पहचानी ।
हे 'हरि' उसने व्यर्थ बिताया जन्म खाक ही छानी ।। माया०।।७।।

"लावणी" (राग कहरवा) नं. २१

अम्ब तू जग का दुःख हरती ।
पुत्र का माँ ज्यों हित करती ।।
सकल खलदल का बल हरती ।
विश्व में सुख सम्पत् भरती ।।

दोहा:—जब जब दुर्जन दैत्यगण बनैं भूमि के भार
तब तब तूही देह धर करती जग उद्धार
विश्व पर दया सुधा झरती ।। अम्ब तू जग० ।।१।।
तुम्ही हो परा प्रकृति माया, विश्व सब तुमसे ही आया
तुम्हारी ही सबमें छाया, यही सब श्रुतियों ने गाया ।।

दोहा:—त्रिगुण भी गुण से परै, अविकृति भी सविकार
और निरंजन भी प्रगट तू सबका आधार ।।
स्ववश में किसे नहीं करती ।। अम्ब तू जग० ।।२।।
दौड़ती है तू बिन पद भी, ग्रहण करती तू बिन कर भी
देखती है तू बिन दृग भी, शब्द तू सुनती श्रुति बिन भी ।

दोहा:—एक गूढ़ सब में रहै व्यापक परम प्रकाश
तृण से तू परब्रह्म तक करती रहै विलास ।।
भक्त हित तू हो तनु धरती ।। अम्ब तू जग ।।३।।
जिसे जैसे सुर मन भावे लोग हर किसे क्यों न ध्यावें
सदा गुण किसके भी गावें, अन्त में सब तुझमें आवें

दोहा:—जैसे जाकर सब नदी करैं सिन्धु में वास
वैसे विधि हरि शम्भु का भी तुझमें ही विलास
तुहीं जग पालन लय करती ।। अम्ब तू जग० ।। ४ ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गजल कव्वाली (रेखता) नं. २२

भरोसा है मुझे तेरा जगत् शङ्कारिणी तारे ।
तुही मदमत्त दैत्यों की महा मदहारिणी तारे ॥१॥
जिसे विद्या परा कहते प्रकृति वा चेतना सबकी ।
वही तू योगियों की है हृदय संचारिणी तारे ॥२॥
परात्पर तत्व रूपा भी दया कर विश्व जीवों पर ।
तुही कारण बने जग की समुद्भव कारिणी तारे ॥३॥
किसी भी रीति से कोई किसे भी क्यों नहीं ध्यावे ।
अन्त में ध्येय होती है तुही दुख हारिणी तारे ॥४॥
जपै जो मन्त्र सीताराम लेकर हाथ में माला ।
तुही उस मन्त्र में भी है चमत्कृति कारिणी तारे ॥५॥
पुरुष जो शुद्ध मन होकर कहै क्षण एक भी तारा ।
उसे तू ज्ञान देती है कलुषगण हारिणी तारे ॥६॥
पड़ा भी क्रूर बाधा में तुझे जो ध्यान से देखे ।
सुखी उसको बनाती तू विपत्सन्तारिणी तारे ॥७॥
दरिद्री जो करै तेरा स्मरण अवधान देकर के ।
उसे ऐश्वर्य देती तू सुसम्पत् कारिणी तारे ॥८॥
मूक भी लोग जो तेरा हृदय में ध्यान करता है ।
उसे कविराज करती तू सुवीणा धारिणी तारे ॥९॥
विलसती हरिहरादिक में निरन्तर चेतना है जो ।
वही तू जग सृजै पालै तूही संहारिणी तारे ॥१०॥

(लावणी रंगतखड़ी) नं. २३

करो साहं साहं उच्चार, यही है सब वेदों का सार
सोहं सोहं यह न सही है, क्योंकि ब्रह्म पुँल्लिग नहीं है
जीवाधारा प्रकृति कही है संवित् वा चेतना वही है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो कहते हैं ब्रह्म से शक्ति प्रकृति है भिन्न ।
वे झूठे हैं सर्वथा उनकी मति है भिन्न ॥
जचाओ मन में तत्त्व विचार ॥ करो सोहं सोहं० ॥१॥

हृदय से पक्षपात तोड़ो भेद भावों से मुख मोड़ो
न ऊपर ऊपर ही दौड़ो, तत्त्व शास्त्रों का मत छोड़ो
जो रहती है ब्रह्म में पराशक्ति चिद्रूप
करके सोहं नाद तुम वह ही बनो अनूप ॥
न पावो जिससे कभी विकार ॥ करो सोहं० ॥२॥

जीव जो श्वासों को भरता उन्हीं से ध्वनि जो उच्चरता
मोक्ष हित अजपा जप करता, ह बाहर सा भीतर धरता
उलटा हंसा मन्त्र है सोहं सीधा जाप
अर्थ यही है मैं वही सम्वित् रूपी आप
यही है सब जग की आधार ॥ करो सोहं० ॥३॥

जगत् से ब्रह्म जुदा रहता विलग ज्यों जल से जलज यथा
क्रिया से हीन वही है यों, अचेतन अक्रिय रहता ज्यों ॥
उस ही की चित् शक्ति है उसमें रहती लीन
जो न तत्त्व यह जानता वही ज्ञान से हीन ॥
कहा हरिहर ने है यह सार ॥ करो सोहं ॥४॥

राग सारंग (तिताल) नं २४

चण्डिके करदो रिपु संहार ।
अत्याचार परायण है यह करता दम्भ अपार ॥टेर॥
एक महिष को रण में पहले जैसे दिया विदार,
वैसे ही कर दो इस हरि के सहज शत्रु को छार ॥१॥
यह दुर्वृत्त महिष है मातः विप्र न इसे विचार,
सींग भाल पर इसके सिर पर शिखा पुच्छ निर्धार ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छलता है हरि भक्तों को यह कपटी है बटमार,
हरि से विमुख हरिद्वेषी पर कभी न करुणा धार ॥३॥
इसके तनु पर तीव्र वेग से चला तेज तलवार,
जिससे खण्ड खण्ड हो कर वह जावे जम के द्वार ॥४॥
बगला भक्त दुष्ट आशय का दुर्जन यह दुखकार,
खेल चुका यह हरि हित इसका अब करिये संहार ॥५॥

राग काफी (तिताला) नं. २५

मेरा कहा चित्त तू मान।

यदि तू सुख से और सहज ही लिया चाहता पद निर्वाण ॥१॥
मित भोजन कर मित भाषी हो, फिर एकान्त स्थान वासी हो,
आसन दृढ़ योगाभ्यासी हो, धर विराग शुभ संन्यासी हो।
ब्रह्मचर्य रख गुरुदीक्षा ले सीख रोकना अपने प्राण मेरा॥२॥
फिर तू प्राणायाम चढ़ाकर, कुण्डलिनी को शीघ्र उठा कर,
जीव ब्रह्म के साथ मिलाकर कुण्डलिनी को अमृत पिलाकर।
चित्सम्बित् आनन्द रूपिणी जगदम्बा कर तू ध्यान मेरा॥३॥
जग का कारण एक यही है इससे पर कुछ कहीं नहीं है।
इससे ब्रह्म द्वितीय नहीं है श्रुतियां भी यह बोल रही हैं।
सृष्टि मात्र में व्याप्त समझ कर इसी रूप में सबको जान मेर॥४॥
कर्म फांस यों कट जायेगी समता शक्ति प्रगट आवेगी,
और वासना हट जावेगी फिर वह पदवी झट पावेगी।
फिर समाधि कर सिद्ध हृदय में आत्म-तत्त्व को नित पहचान मेरा॥५॥
ज्यों ज्यों यह अभ्यास बढ़ेगा जीव मुक्ति सोपान चढ़ेगा,
इस पर ब्रह्म सा रूप मढ़ेगा यह उससे पीछा न करेगा।
तब हरि तू ही ब्रह्म रहेगा समझ यही है तत्त्वज्ञान ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राग गरबी (ताल दादरा) नं. २६

जगत अम्बा सिंह चढ़ी आवे ।।
मेरु पर ज्योति विभा चंचल,
उदित हो ज्यों रवि का मण्डल ।
भवानी भी वैसी प्रभा पावै जग० ।।१।।
मनोहर चार भुजा धारी,
सकल साधक दुख परिहारी ।
भक्त इनही से वर पावें जग० ।।२।।
चमकते खड्ग त्रिशूल महा,
तेज जिनका जावे न सहा ।
देख दानव दल दहलावे जग० ।।३।।
भाल पर कस्तूरी बिन्दु,
देख कर लज्जित हो इन्दु ।
मधुर मञ्जुल मुख मुसकावे जग० ।।४।।
यही है ब्रह्म यही माया ।
न इसका आदि अन्त पाया
इसे श्रुति नेति नेति गावे, जग० ।।५।।
यही सत् चित् यह अगुणा है,
यही जग के हित सगुणा है ।
इसे ही सब सुर मुनि ध्यावैं जग० ।।६।।
दुष्टता जब जब दैत्य करैं,
भूमि पर अति पाखण्ड भरैं ।
यही तब जग दुख निपटावे जग० ।।७।।
प्रेम में इसके लय होकर,
भजो इसको सब छल खोकर ।
यही 'हरि' निर्वृति कहलावे जग० ।।८।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गज़ल कव्वाली नं. २७

महा लक्ष्मी ! मुझे अपना दरस अब कब दिखाओगी।
मेरे विश्वास को दुर्गे सफल अब कब बनाओगी ॥१॥

पड़ा हूँ द्वार पर तेरे भिखारी हूँ दया दृग का।
दया सिन्धो ! दया की बिन्दु मुझ पर कब गिराओगी ॥२॥

पढ़े हैं शास्त्र पर उनसे कई संकल्प होते हैं।
इन्हें कर शान्त अद्वय का सुगम पथ कब दिखाओगी ॥३॥

किये अज्ञान वश मैंने कई दुष्कर्म हे मातः।
मेरी इस डूबती नैया को तट पर कब लगाओगी ॥४॥

भयाकुल हूँ भवानी मैं थका हूँ मां भव भ्रम से।
मुझे पुचकार कर करुणा से कब गोदी चढ़ाओगी ॥५॥

तपा हूँ तीनों तापों से जगन्माता मेरे तनु पर।
सुधा शीतल तुम्हारा पाणि पल्लव कब फिराओगी ॥६॥

वृथा भूला फिरा हूँ मां खलों में खेलता दिन भर।
निशा होने लगी हरि को निकट में कब बिठाओगी ॥७॥

(गजल) नं० २८

धन्य जगदम्ब तुम्ही धन्य तुम्हारी माया।
अब तक भी प्रभाव तुम्हारा न समझ में आया ॥१॥

सत् हो तुम तुम से हुआ सर्व जगत् भी सत् है
क्योंकि कहीं सत से असत् प्रगट में नहीं पाया ॥२॥

देव विष्णु ब्रह्मा शिव इन्द्र आदि सब ही ने
चेतन आनन्दमयी ब्रह्म तुम्हीं को गाया ॥३॥

ज्योति परा शक्ति हो अम्ब ! तुम्ही विद्या हो
उसकी सत्ता ही नहीं जिसने तुम्हें नहीं ध्याया ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मूल प्रकृति आप बीच यह रहे प्रपञ्च सभी
आदि युग काल में फिर विश्व तुम्ही से आया ॥५॥

भूमि पर दैत्यों का जभी दम्भ हो प्रचण्ड उठे
करके कृपा आप तभी धारती मनुज काया ॥६॥

जिसपे दया दृष्टि हुई देवि तुम्हारी क्षण भी
अद्वय आनन्द का परिबोध उसी ने पाया ॥७॥

तनु धार जो आपको ध्याता न कभी है।
'हरि' सत्य कहै उसने वृथा जन्म गँवाया ॥८॥

(राग भैरवी ताल कहरवा) नं० २६

अम्बाजी मन भावै रे
और न कछु सुहावै ॥टेर।

ललित छवि श्री ललिताजी की मनके बीच समावे।
शारद विधु सम मुख मण्डल से स्मित पीयूष बहावे ॥१॥

कल्प लता सम चार भुजायें इच्छित फल बरसावे।
तेजपूर्ण किरणों तनु में से जगमग ज्योति जगावे ॥२॥

मोती भरी माँग सिन्दूर से अधिक प्रभा सरसावे।
अधर बिम्ब पर बीड़ी का रस लख माणिक्य लजावे ॥३॥

धनुष बाण पाशांकुश चारों सेवक भय बिनसावे।
चरण सरोरुह शोभा 'श्री हरि' मुख से कही न जावे ॥४॥

विष्णु करै पूजन चण्डी को ब्रह्मा वेद सुनावे।
शिव जय नाद करै सुरसारे दिव्य पुष्प बरसावे। ॥५॥

दोनों तरफ भाती लक्ष्मी (दोनों) चंचल चमर डुलावे।
वह छवि 'श्री हरि' हृदय समाई अब भूली नहीं जावे ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"राग मांड तिताला" नं० ३०

सखी म्हानै प्यारो लागे ए माई श्री ललिता जो को श्रृङ्गार
सखी म्हानै प्यारो लागे ए ॥ टेर ॥
शीश मुकुट चन्दा चमकीलो तुर्रो कलंगी दार।
भाल तिलक काना मणि कुण्डल मुख रविशत उजियार ॥१॥
अरुण अधर पर बीड़ी को रंग सुषमा भरे अपार
नासा गज मुक्ता छवि छाजै गल मोतियन को हार ॥२॥
बाला तप सो वर्ण तनू को साड़ी जरकस दार।
चार भुजाएँ कल्प लता सी मनवांछित दातार ॥३॥
बाजू बन्ध जड़ाऊ कंकण मुदरी जगमग कार
धनुष बाण पाशांकुश चारों कर विलसे हथियार ॥४॥
कटि करधनी शंभु मन मोहै पद नुपूर झंकार।
श्रीहरि ललित चरणनख मणि पर तन मन दीनों वार ॥५॥

'राग धनाश्री' नं० ३१

अम्बिके भारत देश उबारो ॥ टेर ॥

डूब्यो जाय निबल गज सों यह म्लेच्छ ग्राह को मारो
फुसला कर मझधार फंसायो लूट लियो धन सारो अम्बिके ॥१॥
निबल कियो विद्या बल छीनो पद पद बन्धन डारो
शासन दम्भ द्वेष परिपूरण न्याय महा अँधियारो अम्बिके ॥२॥
सूझै न और उपाय चण्डि के शरणो लियो तुम्हारो
शुम्भ निशुम्भ और महिषासुर रक्तबीज संहारो अम्बिके ॥३॥
वैसे ही इस दानव दल को जल्दी मार निकारो
करो स्वतन्त्र सुखी भारत को अपनो विरद संभारो अम्बिके ॥४॥
जब जब भीर पड़ी भारत पर तब तब आय उबारो
अब क्यों देर लगाई अम्बा !श्री हरि विनय सिकारो अम्बिके ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'राग विहागरो' तिलंग तिताला नं० ३२

चण्डी स्मरण संकट हरण

समझ रे नर सत्य साधन सर्व मंगल करण ।
ब्रह्म विष्णु महेश शेष सुरेश त्रिपदा हरण ॥१॥

मनु मरीचि वशिष्ठ नारद मुनि तपस्याऽऽभरण ।
सर्व निगमागम प्रबोधन एक अशरण शरण ॥२॥

पाप शोधन करण, सेवक ताप त्रय उद्धरण ।
वैरि को संहरण निश्चय भक्त को हित करण ॥३॥

सम्पदा स्थिर करण, वैभव भरण, भवसंतरण ।
धैर्य शौर्य विवेक विद्या-धरण सुख संचरण ॥४॥

विघ्न को परिहरण जड़ता जरण दारिद दरण ।
स्वर्ग को उपकरण 'श्रीहरि' मोक्ष लक्ष्मी वरण ॥५॥

नं० ३३

जय हो जगदम्ब विजय हो ।
सुख का सब भाँति समय हो ॥

भक्तों की रक्षा करती, सुख देती भव भय हरती ।
मन ज्ञान सुधा से भरती, करती रिपुओं का क्षय हो ॥१॥

मधु कैटभ को मरवाए; विधि के भय दूर भगाए ।
तूने ब्रह्माण्ड रचाए निर्गुण भी तुम गुण-मय हो ॥२॥

महिषासुर का उर फाड़ा, खल शुम्भ निशुम्भ पछाड़ा।
मद चण्ड मुण्ड का झाड़ा, दुर्जन की तुम्हीं प्रलय हो ॥३॥

जो पूजा करै तुम्हारी, स्तुति नित्य सुनावे प्यारी ।
वह पावै वैभव भारी, जग में उसकी ही जय हो ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महिमा कैसे कोई गावै नहीं पार हरिहर पावै ।
श्रुति नेति नेति बतलावे तुम्हीं परब्रह्म अभय हो ॥५॥
तुम सूर्य चन्द्र में ज्योति आधार धरा में होती ।
तू क्षीर सिन्धु का मोती तुमही मारुत में रय हो ॥६॥

राग प्रभाती नं० ३४

उठ प्रभात अम्बिका के चरण कमल ध्याऊं ।
मन को निज साथ साथ मणिपुर ले जाऊं ॥१॥ उठ०
ललिता छवि ललित देख लोचन फल पाऊं ।
मन सें कर मन्त्र जाप जिह्वा सफलाऊं ॥२॥ उठ०
प्रेम गन्ध पूर्ण प्राण पुष्प ले चढ़ाऊं ।
गायन में गूंथ गूंथ नाना गुण गाऊं ॥३॥ उठ०
कर्म जाल धूप ज्ञान वह्नि पै जलाऊं ।
जीव ज्योति मातृ चरण-पद्म पै घुमाऊं ॥४॥ उठ०
भाव भरे भोग लगा आनन्द जल पाऊं ।
विषयों की बाती जला, आरती कल्पाऊं ॥५॥ उठ०
अनहद में हंस भ्रमर बाजे बजवाऊं ।
चण्डी पद पूज पूज पल पल शिर नाऊं ॥६॥ उठ०
दक्षिणा में स्थूल सूक्ष्म सर्वस अरपाऊं ।
'श्रीहरि' फिर जन्म मरण लेकर नहीं आऊं ॥७॥ उठ०

नं० ३५

बिना मां करुणा कौन करै ।

क्षुधा जन्म के साथ लगे तब मुख पय कौन झरै ।
मूक अबोध विवश बालक को हिय पै कौन धरै ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पल पल सुख देती पर शिशु के संकट कौन हरै ।
दयापूर्ण (भरी) दृगसे निहार नित पालन कौन करै ॥२॥
सुख पहुंचाने का हित धर, पर दुख में कौन परै ।
ज्ञान और विज्ञान कला मानस में कौन भरै ॥३॥
तनु पर तनिक ताप सुन दृग से आंसू कौन झरै ।
अवगुण सारे सहती गुणके भाजन कौन भरै (करै) ॥४॥
ऐसी ज्ञान कृपा की मूरति मां से कौन फिरै ।
जो निश्छल करुणा निधान संतत उपकार करै ॥५॥
बिना कृपा माता की जन कों पिता न जान परै ।
श्रीहरि मा की कृपा नाव से भव अम्भेधि तरै ॥६॥

गजल कव्वाली नं० ३६

यही इच्छा है मां तेरी मैं ऐसी भक्ति कर पाऊं ।
तेरे सोये सपूतों शेर बच्चों को जगा पाऊं ॥१॥
भटकते भव के पथिकों को तुम्हारा पंथ बतलाकर ।
जगत में अम्ब निगमागम धरम को फिर जमा जाऊं ॥२॥
अशक्तों को बनाकर शक्त तेरी श्री समर्चा से ।
सुभागी शक्तिशाली देश भारत को बना जाऊं ॥३॥
तुही है शक्ति तेरे बिन न कोई तत्व रह सक्ता ।
तुम्हारी दिव्य महिमामय सुधा सब को पिला जाऊं ॥४॥
सभी कुम्हला गई शक्तिज्म की लोनी लता इसमें ।
सिंचा उपदेश का पानी नई कलियां खिला जाऊं ॥५॥
तुम्हारे आसरे जीकर बने तुमसे विमुख है जो ।
करैं पाखण्ड दुनियाँ को ठगें उनको दबा जाऊं ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम्हारी अर्चना साधन तथा जप जाप की निन्दा।
करें उन मन्द मतियों की कुमति को मैं चबा जाऊं ॥७॥
तुम्हें जब से तजा है मां तभी से है दुखी भारत।
इसे आजाद करने फिर तेरा साधन सिखा जाऊं ॥८॥
बनाया दास जिनने है उन्हीं व्यापारियों का मत।
तुम्हारे ब्रह्ममय अद्वैत के रंग में रंगा जाऊं ॥९॥
कहूं क्या मां अधिक संसार में देखूं उसी से मैं।
शिव दुर्गे भवानी माँ तुम्हारी जय बुला जाऊं ॥१०॥
तुम्हारे ही चरण पंकज में मेरी लौ लगे निशदिन।
मरूं जब साथ 'श्रीहरि' मनको मणिपुर में लिवा जाऊं।११।

रसिया नं० ३७

मत भूले रे नर निज मैया को।
यही करैगी भवसागर से पार तेरी इस नैया को।
जिसका तुझे भरोसा है वे सुर सेवे उस मैया को ॥१॥ मत०
शिव सनकादि मुनीश्वर देखो देखो देव कन्हैया को।
शेष गणेश इसी को ध्यावे इष्ट यही बल भैया को ॥२॥ मत०
राम करै सब काम इसी के रवि शशि लेत बलैया को।
मधुर सुधा गंगाजल तजकर पीये क्यों नीर तलैया को ॥३॥ मत०
मूरख दोड़ गाडरी दौहै तज कर दिव की गैया को।
जनम दियो जब पय पीनेको क्यों न बुलाई कोई दैयाको ॥४॥ मत०
भुक्ति मुक्ति हित भज मन उस ही जग की एक रचैया को।
'श्री हरि' मातृ विमुख रहने के तज दे क्रूर रवैया को ॥५॥ मत०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नम्बर ३८

आवो सहेली आपां चण्डी ने मनवां ए ॥

सुरति विरति मन के संग आओ मंगल साज साजवां ए ।
गगन पंथ में बहती पावन त्रिवेणी में न्हावां ए ॥१॥

निर्मल हुया पहुँच मणिपुर में अम्बा दर्शन पावां ए ।
कर प्रणाम जय जय जय कहकर जिह्वा सफल बनावां ए ॥२॥

ध्यान लगा दृढ़ प्रेम वारि से मां का चरण धुलावां ए ।
विमल वासना मयी कुसुम्भी रंग का वसन पिन्हावां ए ॥३॥

चित् को चन्दन लगा भालपर सत् का अक्षत चढ़ावां ए ।
विविध कर्म कुसुमां का नव नव हार गूंथ पहनावां ए ॥४॥

ममता की सुगन्ध परिपूरण इत्र फुलेल लगावां ए ।
प्राणमयी हीरा मणि माणक निछरावल बरसावां ए ॥५॥

स्निग्ध मधुर रसवान भाव के व्यंजन भोग लगावां ए ।
गूगल धूप लोभ की खेवाँ जीव की ज्योति जगावां ए ॥६॥

विषय कपूर जलाकर आरति तन मन भेंट चढ़ावां ए ।
बोध मयी वीणा का स्वर भर ललिता का गुण गावां ए ॥७॥

पावन अम्बा चरित सुधा रस पीवा और पिलावां ए ।
श्रीहरि परमानन्द मग्न हो फिर नहीं भव में आवां ए ॥८॥

नम्बर ३९

अब के कर भव पार मेरी अम्बा जी ॥

यह भव सिन्धु अगाध है तर न सकै जन कोय ।
जब तक जग तारण तरणि शक्ति सहाय न होय ।
सत्य यही निर्धार मेरी अम्बा जी ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दुस्तर जान पड़ा नहीं जब तक रखा न पैर ।
करता सैर बढ़ा तनिक दिखी न आगे खैर
बदले सभी विचार मेरी अम्बा जी ॥२॥

बिना बढ़े भी बह गया पा प्रवाह का जोर ।
निज को रोक सका नहीं उठी तरंगे घोर ।
पड़ीं कई फटकार मेरी अम्बा जी ॥३॥

होने लगा विवेक का दिनकर—मंडल अस्त ।
कुछ न सहारा देख कर हिम्मत हो गई पस्त ।
तनु में रहा न सार मेरी अम्बा जी ॥४॥

नक्र मकर मुख फाड़ कर बहुत आ गये पास ।
धैर्य गया गिर शीघ्र ही लगा टूटने श्वास ।
घोर हुआ अंधियार मेरी अम्बा जी ॥५॥

डूब रहा मंझधार में दिखै न परली पार ।
देवि दया कर शीघ्र ही दे अवलम्ब उबार ।
तुम हीं हो रखवार मेरी अम्बा जी ॥६॥

दुर्गे ! दुर्गति हारिणी दुःख हरणी जगदम्ब ।
भक्तों के सङ्कट हरे किया न तनिक विलम्ब ।
अपनों विरद संभार मेरी अम्बा जी ॥७॥

निज करुणा की नाव का आश्रय दे अविलम्ब ।
लगा पार भवसिन्धु के जय जय जय जगदम्ब ।
बन आ खेवनहार मेरी अम्बा जी ॥८॥

तुम ही सिरजन हार हों तुम ही पालन हार ।
तुम्हीं हेतु संहार की तुम ही सर्वाधार ।
महिमा तेरी अपार मेरी अम्बा जी ॥९॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब की पार उतार दे फिर न करूं यह भूल।
भक्ति करूंगा आपकी सहूं न यह दुख शूल।
करिये हरि उपकार मेरी अम्बा जी॥१०॥

गजल कव्वाली नं. ४०

तुम्हें अम्बिका को सुमरना पड़ेगा।
सदा ध्यान दुर्गा का धरना पड़ेगा॥१॥
अभी चाहे मानो न मानो हमारी।
इसी राह आखिर गुजरना पड़ेगा॥२॥
यही ज्ञान विज्ञान के योग्य माया।
इसी घाट पै आ उतरना पड़ेगा॥३॥
बिना इसके जाने न जाना कहीं हो।
सखे मोक्ष की आश तजना पड़ेगा॥४॥
महत् वा महाभूत प्रकृति यही है।
इसी के गुणों को समझना पड़ेगा॥५॥
यही जीवों का एक आधार सच्चा।
इसी में तुम्हें आके मिलना पड़ेगा॥६॥
यही विश्व की मूल विद्या परा है।
यहीं से अविद्या बिसरना पड़ेगा॥७॥
यही ब्रह्म अद्वैत की ज्ञान दाता!
नहीं इस से आगे विचरना पड़ेगा॥८॥
यहाँ सच्चिदानन्द का रूप धरके (पाके)
अनिर्वाच्य हो फिर न फिरना पड़ेगा॥९॥
भरोसे पै जिनके रहे भूल हो तुम।
उन्हें भी यहीं से वदलना पड़ेगा॥१०॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुणों के वे हैं अंश तो सत्य मानो।
नहीं इससे आगे निकला पड़ेगा ॥११॥
कहो अब तुम्हें कृष्ण क्या मुक्ति देंगे।
जिन्हें तुम से पहले पिघलना पड़ेगा ॥१२॥
यहीं तक हरे! ज्ञान योगादि की है।
बड़ी उलझनों को सुलझना पड़ेगा ॥१३॥

भुजंग प्रयात छन्द न. ४१

नमो देवि आनन्द रूपे अरूपे।
नमो विश्व रूपे परब्रह्म रूपे॥
नमः काम रूपे महा महारानी।
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥१॥

तुम्हीं अंबिका व्यक्त अव्यक्त रूपा
तुम्हीं निर्गुणा षड् गुणा गुण्यरूपा
तुम्हीं विश्व के रूप की राजधानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥२॥

तुम्हीं विष्णुमाया तुम्हीं योग माया
जगज्जाल सारा तुम्हीं ने बिछाया
तुम्हीं को परब्रह्म देवों ने मानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥३॥

तुम्हीं हो परै से परै ज्योति रूपा
तुम्हीं हो महादेवि संविद् स्वरूपा
तुम्हीं हो जगज्जीवों की मुक्तिदानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥४॥

तुम्हीं ब्रह्म विष्ण्वादि की आदि माता
तुम्हीं हो सुरों की सदा वृत्ति दाता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम्हीं एक निर्वाण की हो निशानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥५॥
चितों की परा चेतना चण्डिका हो
प्रभा सूर्य की चन्द्र की चन्द्रिका हो
तुम्हें अग्नि की उष्णता रूप जानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥६॥
तुम्हीं व्याप्ति आकाश में हो अलक्ष्या
तुम्हीं वेग हो वायु में सर्व लक्ष्या
तुम्हीं साधु सन्तों की हो दिव्य वानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥७॥
तुम्हीं कालिका तारिणी छिन्नमस्ता
रमा षोडशी वैष्णवी सूर्पहस्ता
तुम्हीं भैरवी शावरी वेद वानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥८॥
तुम्हें सिद्ध योगीन्द्र ध्यावें मनावें
पदाम्भोज में विष्णु मत्था नवावें
तुम्हें देखते ध्यान संयुक्त ध्यानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥९॥
कहे कौन ऐश्वर्य सारा तुम्हारा
बताता सहस्रास्य हारा विचारा
तुम्हें जानते ही बनें पूर्ण ज्ञानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥१०॥
दया की सुधा वर्षिये 'श्रीहरि' पै
रमें प्रेम से पर्षिये 'श्रीहरि' पै
महेशानि कल्याणि दुर्गे मृडानि
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ॥११॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रेखता नं० ४२

नगराज नन्दिनी के दर्शन तो कीज़िए
मृगराज बाहिनी का आश्रय तो लीजिए ॥१॥

फिर चाहे तर्क कीजिए कोई भी बात पर
उत्तर तुरत मिलैगा मन में पतीजिए ॥२॥

देखो यही है मुक्ति की दाता महेश्वरी
इस ही के पाद पद्म पै मन भृंग दीजिए ॥३॥

ऋषियों की हम सुनावें यह श्रेष्ठ सम्मति
इस पै जरा भी संशय मन में न कीजिए ॥४॥

इसके चरण कमल को देखा कि तर्क सब
मिटते हैं तो यही अब रस क्यों न पीजिए ॥५॥

गर अब नहीं करोगे पूजा महेश्वरी की
तो ज्ञान के लिए भी नित कर ही मींजिये ॥६॥

विद्या यही परा है माया है मां भवानी
तो भुक्ति मुक्ति दोनों कर क्यों न कीजिए ॥७॥

'श्री हरि' विशेष अनुभव करके ही कह रहा है
मतवालों के मतों पर मत ध्यान दीजिए ॥८॥

राग खमाच नं. ४३

मन ! मन्त्र भवानी को जपबा दे ।

दुर्गा नाम स्मरण से म्हारा पाप खपै ज्या ने खपबा दे ।
तू तो बच भव दावानल से और तपै ज्या ने तपबा दे ॥१॥

गुरु की कृपा जहाज चढ जो भव सिन्धु तरे ज्याने तरबा दे ।
मतवाला अपणो मत फैला दंभ करै ज्याने करबा दे ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हरिहर भेद अंधारो कूवो ईंमें पड़ै ज्यानै पड़बा दे ।
कण्ठी तिलक छाप पर मूरख व्यर्थ लड़ै ज्याने लड़बा दे ॥३॥
माने त्याग कपूत और की शरण तकै ज्याने तकबा दे ।
मां का बिना बताया पिता ने ढूंढ थकै ज्याने थकबा दें ॥४॥
आगम मूल धर्म पर थोथा तर्क करै ज्याने करबा दे ।
दीपक ऊपर पड़ पतंग ज्यों आप मरै ज्यानै मरबा दे ॥५॥
माया पर मद धार जाल में मूढ़ फँसै ज्याने फँसबा दे ।
'हरि' ने चण्डी चरण पूजताँ लोग हंसै ज्यानै हंसबा दे ॥६॥

नम्बर ४४

भवानी ऐसो कौन उदार ।

बिन याचना किये ही मन के वांछित पूरण हार ॥१॥
भक्ति किए से हरिहर ब्रह्मा सुर करते उपकार ।
तुम निर्व्याज दया की सागर सहज शील दातार ॥२॥
वेद पुराण प्रमाण बताये साखी है संसार ।
बिना पढ़े सत्यव्रत को तुम दीनो ज्ञान उदार ॥३॥
राजकुमार सुदर्शन ने कहो कियो कौन उपचार ।
युद्ध जिताय विवाह करायो दियो राज्य सुख सार ॥४॥
कहना दूर हुआ कहने की इच्छा के अनुसार ।
दे देती हो नर नारी को सुख सम्पत्ति अपार ॥५॥
क्या सुबाहु ने सेवा की थी दीन्हों दर्श उदार ।
तब से हो प्रसन्न काशी में कियो वास स्वीकार ॥६॥
देवि दया कर यों कहते की सुनकर देवि उचार ।
देती हो वह पद जिसको विधि कर न सकै निर्धार ॥७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'श्रीहरि' पै निष्कारण करुणा करिए गुण आगार ।
जय जय कार रहेगा जुग जुग जीवन हो सुख सार ॥८॥

चण्डी की कव्वाली या सच्ची सलह नं० ४५

सफल नर जन्म करना है तो प्रतिदिन ध्याइये चण्डी ।
जो सुख सम्पन्न बनना है तो मन में लाइये चण्डी ॥१॥
अगर सब तन्त्र शास्त्रों के रहस्यों को समझना है ।
सुगुरु से मन्त्र दीक्षा ले सुमरते जाइये चण्डी ॥सफल नर० ॥२॥
प्रबल कलिकाल में भी जो चमत्कृति देखना है तो ।
अभीप्सित देवता कहकर तुरत अपनाइये चण्डी ॥सफल० ॥३॥
अगर विद्वान बन तुमको जगत में ख्याति पाना है ।
तो प्रतिदिन भक्ति से कर ध्यान पढ़ते जाइये चण्डी ॥सफल० ॥४॥
अगम संसार का सारा समझना भेद चाहो तो ।
स्वमन में लौ लगाकर मन्त्र जपते जाइये चण्डी ॥सफल० ॥५॥
सभी कृत कर्म फन्दों को सहज ही काटना है तो ।
बराबर सांस के संग नाम रटते जाइये चण्डी ॥ सफल० ॥६॥
किये निज पाप कर्मों का जो प्रायश्चित्त करना है ।
तो करके मानसी पूजा मनाते जाइये चण्डी ॥ सफल० ॥७॥
अगर हस्तामलक वेदान्त का सिद्धान्त करना है ।
जगत् का मुख्य कारण तो समझते जाइये चण्डी ॥सफल० ॥८॥
बिना श्रम ज्ञान पाना और भव से पार जाना है ।
किसी भी क्षण निजी मन से नहीं विसराइये चण्डी ॥सफल०॥९
सहज ही शक्ति का साधन तुम्हें पढ़ना समझना है ।
तो आर्डर दे इलाहाबाद से मंगवाइये चण्डी ॥ सफल० ॥१०॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कई प्रख्यात विद्वानों के इस में लेख आते हैं ।
स्वयं पढ़िये तथा औरों को भी पढ़वाइये चण्डी ॥सफल० ॥११॥
स्वयं भगवान 'श्रीहरि' भी इसी का ध्यान रखते हैं ।
पत्रिका एक शक्ति की यही अपनाइये चण्डी ॥ सफल० ॥१२॥

नम्बर ४६

भजन करना है तो बन्दे भजन कर श्री भवानी का ।
स्मरण करना है तो प्यारे स्मरण कर श्री भवानी का ॥१॥
परा माया महा शक्ति स्वरूपा सच्चिदेका है ।
महा माहात्म्य वेदों से परखिये श्री भवानी का ॥२॥
निरंजन ब्रह्म का दर्शन किया चाहो यहीं पर तो ।
सगुण शुचि रूप सुन्दरता निरखिये श्री भवानी का ॥३॥
जिसे तुम ब्रह्म परमात्मा तथा परतत्त्व कहते हो ।
अखण्डानन्द वह ज्योति प्रभाकण श्री भवानी का ॥४॥
जो हरि ब्रह्मा महेश्वर और इन्द्रादिक सभी सुर हैं ।
उन्हें समझो कि वह प्यारा प्रजागण श्री भवानी का ॥५॥
श्रुति स्मृतियों. पुराणों और शास्त्रों को निहारोगे ।
प्रभाव प्राय पाओगे विलक्षण श्री भवानी का ॥६॥
महामख अश्वमेधादि स्वयं करना तुम्हें है तो ।
करो राजोपचारों से समर्चन श्री भवानी का ॥७॥
हमीं क्या आप भी देखो सुरा सुर यक्ष पित्रादि ।
स्वयं भगवान करते हैं समर्चन श्री भवानी का ॥८॥
बिना श्रम जो सभी विद्या सहज ही सीखना है तो ।
स्वमन से मन्त्र जप करदो समर्पण श्री भवानी का ॥९॥
"हरे" संसार बाधा को उपद्रव और विघ्नों को ।
मिटाना है तो मन में नाम जपिए श्री भवानी का ॥१०॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नम्बर ४७

मोक्ष की है कामना तो अंबिका को ध्याये जा
चण्डिका दुर्गा शिवा में चित्त को लगाए जा ॥१॥
चेतना सब की यही है प्राणगण संचारिणी
आदि मा शक्ती यही है सर्व मङ्गल कारिणी
तू इसी का मन्त्र जपता पापों को खपाये जा···· ॥२॥
मोक्ष की है कामना तो०॥
हेतु यह ही है जगत् का है यही विश्वेश्वरी
विश्व की परिपालना करती यही परमेश्वरी
तू इसी की अर्चना से सम्पदा बढ़ाये जा ॥
मोक्ष की है कामना तो···· ॥३॥
ब्रह्म विष्णु महेश भी पूजा इसी की करते हैं
स्तोत्र पढ़ते हैं इसी का ध्यान मन में धरते हैं
तू भी इसकी भक्ति में निजभावना चढ़ाये जा ॥
मोक्ष की है कामना···· ॥४॥
ब्रह्म निर्गुण जो निरंतर उसकी संवित है यही
एक ही आनन्द घन यह शुद्ध सत् चित है यही
तू इसी ज्योति से अपनी जोत को जगाए जा
मोक्ष की है कामना है तो.... ॥५॥
शक्ति बिन सारे शिवादिक देव शव के रूप हैं
शक्ति ही इस विश्व में सत्तत्त्व एक अनूप है
तू इसी का ज्ञान कर निज ध्यान को उजलाए जा
मोक्ष की है कामना तो···· ॥६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्म यह परमात्मा यह इससे पर कुछ भी नहीं
जीवों का विश्रान्ति मन्दिर एक यह ही है सही
श्रीहरे तू भी इसी का प्रेम से गुण गाये जा
मोक्ष की है कामना तो··· ॥७॥

नम्बर ४८

मा जैसा कोई नाम नहीं । टेर ।

मा की ध्वनि दुःख भुलाती है
मा की ध्वनि सुख उपजाती है
मा की ध्वनि प्रेम जगाती है
मा की ध्वनि मन को भाती है
मा जैसा कोई धाम नहीं ॥ मा जैसा कोई नाम नहीं

मा ही जग को उपजाती है
मा ही जग को पनपाती है
मा ही सब ज्ञान सिखाती है
मा ही कर्तव्य दिखाती है
मा सम उपकारी राम नहीं ॥ मा जैसा० ॥२॥

मा जैसा मीठा आम नहीं
मा जैसा मधुर बिदाम नहीं
मा जैसा मृदु घनश्याम नहीं
मा जैसा मधु का नाम नहीं
मा सम जग में विश्राम नहीं ॥ मा जैसा० ॥३॥

मा सुत का करती प्यार रहै
मा सुत पर सदा उदार रहै
मा ममता का आधार रहै

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मा करती बेड़ा पार रहै
मा सम कोई निष्काम नहीं ॥ मा जैसा० ॥४॥

मा उमा रमा मा भुवनेशी
मा श्यामा तारा त्रिपुरेशी
मा ही सावित्री सन्ध्या है
मा सम सुर पूरण काम नहीं ॥ मा जैसा० ॥५॥

मा को सुकृती जन ध्याते हैं
मा का निशिदिन गुण गाते हैं
मा से ही सब कुछ पाते हैं
मा पर न्योछावर जाते हैं
मा सम प्रिय लाखों दाम नहीं ॥ मा जैसा० ॥६॥

मा से जो सुत प्रतिकूल रहै
उसके कुल का नहि मूल रहै
सारा जग उसको शूल रहै
उसके शिर पड़ती धूल रहै
दे पुण्य उसे परिणाम नहीं ॥ मा जैसा० ॥७॥

श्री हरि है पूत कपूत सही
पर होगी मात कुमात नहीं
समझो यह लौकिक सूक्ति सही
मा देती जीवन मुक्ति यहीं
मा सेवा से पर काम नहीं ॥ मा जैसा० ॥८॥

नम्बर ४६

हमारा मा मय हो संसार ॥ टेर ॥

मा तो मा है पिता भी मा हो मा बन्धु उदार ॥
मा हो मासी मा भूआ हो मा हो सब परिवार ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मा हो मित्र शत्रु भी मा हो मा गुरु गुण आगार
मा हो राजा महारानी मा, मा हो राजकुमार ॥२॥
मा ब्राह्मण हो क्षत्रिय मा हो मा हो वाणिजकार
मा हरिजन हो मा यति योगी मा हो भील चमार ॥३॥
मा पशु मा पक्षी मा ही हो स्थावर जंगम सार
मा आगे हो मा पीछे हो मा दश हों दिक्पार ॥४॥
मातृ भावना से मैं सारा जग देखूं सुखकार
मा में रहूँ रहे मा मुझ में मा हो सर्वाधार ॥५॥
'श्रीहरि' मेरी भव्य भावना ले मा का अवतार
सकल विश्व के कण कण में हो व्यापक सर्वाकार ॥६॥

नम्बर ५०

जगदम्ब हे भवानी शुभ ज्ञान दीजिए ।
शुचि शील सत्यता का वरदान दीजिये ॥१॥
हम आज बालिकाएं सब आपके पदों पर ।
मस्तक झुका रही हैं कुछ ध्यान दीजिए ॥२॥
विद्या हमें पढ़ाओ व्यवसाय सब सिखाओ ।
अन्वेषणा करें हम विज्ञान दीजिए ॥३॥
गार्गी मदालसा के, अनुसूया औ सती के ।
सीता अरुन्धती के सम मान दीजिए ॥४॥
पुरुषों के धर्म में हम सच्ची सहायिका हों ।
हम सब में आत्मबल का सन्धान दीजिए ॥५॥
विपदाएं पार करके जग में सुयश बढ़ायें ।
श्री हरि को सदा तुम्हारा प्रतिभान दीजिए ॥ ६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रभाती नं० ५१

जागिए जगदम्ब भवानी ॥ टेर ॥

हुआ प्रभात विधाता पढ़ने लगे ब्रह्म की बानी ।
ऊँचे कर दोनों कर जय जय बोलें शार्ङ्ग पानी ॥१॥
रात्रि-सूक्त पढ़ सुना रहे हैं महा महेश्वर ज्ञानी ।
नृत्य दिखावें गुण गण गावें सुर वधुएं हरषानी ॥२॥
शचीं सुरेन्द्र पुष्प बरसावें मणिपुर सौरभ सानी ।
द्वार खड़े सुरगण दर्शन को दर्शन दो महारानी ॥३॥
वीणा में भर साम रथन्तर गावें नारद ज्ञानी ।
दुर्वासा वशिष्ठ भृगु आदिक द्वार खड़े सब ध्यानी ॥४॥
सुन श्री हरि को विनय महेशी करुणा की राजधानी ।
मंगलमयी दृष्टि से जग पर शान्ति-सुधा बरसानी ॥५॥
दरसन कर श्री ललिता जी को त्रिभुवन छबि सरसानी ।
मानस में आनन्द सिन्धु की लहरें नहीं समानी ॥६॥

नम्बर ५२

गुरु बिन भय से कौन बचावे ।

ऐसो कौन समर्थ और जो माया मोह मिटावे ।
उलझ गई ममता की डोरी इसे कौन सुलझावे ॥१॥
अहंकार अंधियार चहूँ दिशि नित्य फैलता जावे ।
गुरु उपदेश भानु प्रगटे बिन इसे कौन विनसावे ॥२॥
सत् में असत् असत् में सत् भ्रम मन को नित्य घुमावे ।
श्री गुरु दत्त प्रबोध बिना यह कहिये कौन हटावे ॥३॥
गुरु है परम समर्थ जगत का कारण तुरत बतावे ।
ध्यान रूप गुरुदेव हृदय में आत्म ज्योति जगावे ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भेद मिटावे सत् दरसावे तत्त्व पीयूष पिलावे।
श्री हरि गुरु बिन कोई न जग में आवागमन मिटावे ॥५॥

नम्बर ५३

बगलामुखि कर जय जय कार !
सुधा सिन्धु के बीच महा मणि मण्डप सोहे,
उसमें कञ्चन पीठ प्रभा से त्रिभुवन मोहे।
सुनहरी फैली प्रभा अपार ॥ बगला ॥१॥
पीताम्बर कमनीय कनक के भूषण साजै,
विकसित चम्पक सुमन माल उर बीच विराजै।
भाल पर केशर तिलक निहार ॥ बगला ॥२॥
एक हाथ में रिपु की जिह्वा पकड़ रही है,
दूजे कर में गदा लिए रिपु झड़क रही है।
भक्त पर करती कृपा उदार ॥ बगला ॥३॥
जो पीताम्बर पहर पीत उपचार चढ़ावे,
हल्दी की जप माल बना बगला को ध्यावे।
करै जप प्रति दिन पांच हजार ॥ बगला ॥४॥
श्री हरि शक्ति समेत चित्त स्थिर कर नर ध्यावे,
वह अराति दल विघ्न दुःख दारिद्रय मिटावे।
विजय पावे बहु बारम्बार ॥ बगला ॥ ५॥

नम्बर ५४

मन उसी पन्थ पर चलता है ॥
जहां बावड़ी कूआ सरवर सब में अमृत उभलता है,
दोनों हाथ जहां सुर तरु सा एक एक द्रुम फलता है ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जहां प्रवेश प्राप्त होते ही सकल भेद भ्रम टलता है,
सुथरी साफ एक पद्धति है और न पन्थ निकलता है। २॥
गुरु बचनामृत पी पी जिसमें मन दिन रात उजलता है,
देख प्रकृति सौन्दर्य अनूपम भाव भरै निश्चलता है ॥३॥
कहीं कुसुम लहलहै कहीं लावण्य लता पर हिलता है,
जहाँ खूब मकरन्द पान कर भी नहीं मधुप मचलता है ।।४।।
मोह तिमिर का जहां तनिक भी नाम निशां नहि मिलता है,
ज्योति जहां सर्वत्र जागती धूंआ नहीं निकलता है ॥५॥
पाप पुण्य दोनों का पचड़ा जहाँ नहीं कुछ चलता है,
खुद मश्ती की शिशिर हवा में जग झंझट नहिं खलता है ॥६॥
गुरु उपदेश विमान हमें ले चलता आप संभलता है,
पहुँचाता उस चित् संवित् में जहां प्रपंच पिघलता है ॥७॥
ममता के सब फन्द लिए अज्ञान जहाँ जा गलता है
श्री हरि सत्‌चित् आनन्द घन बन परसंवित में ढलता है ॥८॥

तर्ज पणिहारी—गूजरी (राग एक ताल) नं० ५५

दुर्गे दुर्गति हारिणि सुख कारिणि हे,
महा महेश्वरि देवि जय जगदम्ब शिवे ॥
चंचच्चन्द्र कपर्दिनि खल मर्दिनि हे,
विश्व विमोहिनि गौरि ॥१॥
दक्षिण कालि कपालिनि जय शालिनि हे,
मुण्डक मालिनि चण्डि ॥२॥
कमल दलायत लोचनि भव मोचनि हे,
त्रिपुरे परमेशानि ॥३।
दानव दल वित्रासिनि मृदु हासिनि हे
चतुरतरे शिव दूति ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मधु कैटभ मति मोहिनि धन दोहिनि हे,
हरि वाहिनि भुवनेशि ॥५॥
महिषासुर मद भंजनि सुर रंजनि हे,
त्रिभुवन सुख संदात्रि ॥६॥
रक्ताम्बर परिधारिणि भय हारिणि हे,
भूति प्रदे भवानि ॥७॥
द्युति जित राका यामिनि गजगामिनि हे,
करुणावति कामाक्षि ॥८॥
साधक सिद्धि विधायिनि वर दायिनि हे,
लोचन गोचरमेहि ॥९॥
चक्र शूल करवालिनि मणि मालिनि हे,
मातर्मामभिरक्ष ॥१०॥
रक्त बीज परिशोषिणि सुरतोषिणि हे,
दया दृशं मयि देहि ॥११॥
शुभ निशुम्भ विदारिणि शर धारिणि हे,
मदरातिं हृदि छिन्धि ॥१२॥
माये संविद् रूपिणि चिद्रूपिणि हे,
परिहर जाड्यतमांसि ॥१३॥
सुरगण विपदुद्धारिणि अघवारिणि हे,
दारय मम दुरितानि ॥१४॥
श्री हरि कवि कलितान्यति ललितान्यपि हे,
मातः शृणु वचनानि ॥१५॥
स्तुति मिति ते पठतामपि जपतामपि हे,
कुरु कशलं कल्याणि ॥१६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नम्बर ५६

भैरव की स्तुति

भजो मन भैरव बारम्बार

नाम मात्र जपने से जन की दे भवभीति निवार,
ऐसो कोई देव न दीखै रंगभीनों सुकुमार। भजो० ॥१॥

काना मुद्रा रत्न जडाऊ जटा जूट शिर धार
लाल विशाल नेत्र मदमाता देखे हरै विकार। भजो० ॥२॥

तिलक त्रिपुण्ड्र तीसरा लोचन बहु शोभा आधार,
जटा जूट में चन्द्रकला की छवि मन के सुखकार। भजो०॥३॥

रूप चतुर्भुज श्याम सलोना दीनों का दुख हार,
शूल कपाल मुण्ड दानव का चमकीली तलवार। भजो०॥४॥

उर कपाल की माल जनेऊ बीच नाग फुँकार,
कटि कछनी जरकसी चमकती पद घूंघर झनकार। भजो०॥५॥

अरुण पुष्प दीपक संयुत जो देवे बलि आहार,
श्री हरि भैरव देव तुरत ही करै आपदुद्धार। भजो० ॥६॥

नम्बर ५७

(महाकाली है महामाया)

महा निशा अंधियारी में ज्यों छाया तिमिर अपार।
व्याप्त हुई द्यावा भूमी में अञ्जन सी द्युति धार,
किसी ने भेद नहीं पाया, महाकाली है महामाया ॥१॥
यही आदि ब्रह्मा की रचना करै यही शिव रूप।
यही विष्णु को प्रगटाती है देकर रूप अनूप,
धारती है अद्भुत काया, महाकाली है महामाया ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्व चराचर की यह ही है निश्चित परम निदान।
भूरि भयंकर भी यह ही है छवि सौन्दर्य निधान
इसी ने यह सब प्रगटाया ॥ महा० ॥ ३ ॥
बिन्दु त्रिकोण तीन वर्तुल से वेष्टित हैं सुखकार
उस पर अष्ट कमल दल सोहै भूपुर तीन उदार।
चक्र का यह स्वरूप गाया, महाकाली है महामाया० ॥४॥
इसमें आप विराज रही हैं माता सह परिवार।
भक्त काम पूरण करने को होती हो साकार।
पार महिमा का नहीं पाया। महाकाली है महामाया ॥५॥
शवशिव पर आरूढ़ हुई मा धर दाढ़ैं विकराल।
अट्टहास करती दिखलाती जिह्वा लोल विशाल।
दिशा का अम्बर अपनाया, महाकाली है महामाया ॥६॥
एक हाथ में खड्ग दूसरे मानव मुण्ड धरै।
तीजेमें वर चौथे करसे भक्त की भीति हरै।
वक्ष पर मुण्ड हार छाया, महाकाली है० ॥७॥
बिखरे केश त्रिलोचन सोहै रवि शशि अग्नि समान।
मृतकपाणि रसना गुण धारै नूपुर शब्द प्रधान।
दृश्य हरिहर को दिखलाया, महाकाली है महामाया ॥८॥

नम्बर ५८

'करैगी तारा भव से पार'

निश्चय रख मन मत घबरा तू, तारा मा को ध्यान लगा तू।
अपने सोये भाग जगा तू, यह ही है श्रुति सार।
करेगी तारा भव से पार ॥१॥
पंचाक्षरी महा विद्या है यह जग में सब को सिद्धा है।
अगुण भी यह गुणविद्धा है, सभी साधन इसका सुखकार ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यही है ब्रह्म ज्ञान दाता, जगत् की रक्षक है माता ।
देवगण इसके पद ध्याता, ज्ञान देती करती उपकार ।।३।।

मुक्ति का साधन देती है, किये पातक हर लेती है ।
ब्रह्म विद्या वर देती है, प्रगट होती है शुभ तनु धार ।।४।।

रूप सुन्दर शोभा आगार, गौर हिम करसा विमल उदार ।
ज्ञान कविता की वहु दातार, बनाती है जीवन सुख कार ।।५।।

शीश अक्षोभ्य नाग वाली
जटा विस्तृत शोभाशाली, चतुर्भुज रूप मुण्ड माली ।
लिया श्री हरि ने निज उरधार करैगी तारा भव से पार ।।६।।

नम्बर ५६

(कमला की प्रार्थना)

ध्यान कमला का मंगल मूल

विष्णु प्रिया महालक्ष्मी श्री रमा विश्व की हेतु ।
कमला कमलालया इन्दिरा सिन्धुसुता सुख सेतु ।।
भक्त के सदा रहै अनुकूल । ध्यान कमला०।।१।।

क्षीर सिन्धु में लाल कमल पर लिये कमल दो हाथ ।
अपर पाणियुग में शोभित है वर अभीति के साथ ।
मिटाती साधक के दुख शूल । ध्यान कमला० ।।२।।

इन्द्र वरुण दोनों गज ऊपर लिये कलश भर दुग्ध ।
करते हैं अभिषेक, पूजते हैं सारे सुर मुग्ध ।
चढ़ावे लाल कमल के फूल । ध्यान कमला० ।।३।।

शुभ त्रिकोण षट्कोण वृत वसुदल भूपुर संयुक्त ।
चक्रराज में पूजित माता करै विपद से मुक्त ।
हार में मुक्ता फल हैं स्थूल । ध्यान कमला० ।।४।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिर पर स्वर्ण मुकुट कानों में कुण्डल मकराकार ।
कटि में रत्न करधनी पदमें नूपुर बजै उदार ॥
देख हरि जावे भव सुधि भूल । ध्यान कमला० ॥५॥

नम्बर ६०

त्रिपुरा बाला की स्तुति

करती अरुण प्रकाश माणिक माला का ।
रूप कहा नहिं जाय त्रिपुरा बाला का ।
कंचन रत्न किरीट शीस पर शोभा पावे
केसर कुंकुम तिलक भाल मंजुल मुसुकावे ।
कुण्डल झलके कर्ण युगलमें छवि सरसावे ।
उर पर माणिकहार लसे मन मोद बढ़ावे ।
दृग में करुणाभाव भक्त प्रतिपाला का । रूप कहा० ॥१॥
एक हाथ जय माल दूसरे पुस्तक सोहै
अपर पाणि युग बीच वराभय मन को मोहै ।
अरुण कमल स्थित हुई त्रिश्व के वांछित दोहै ।
उपमा वर्णन करै भूमि पर वह कवि कोहै ।
तर्पण है रुचिकार उज्वल हाला का । रूप कहा० ॥२॥
नो त्रिकोण पर वर्तुल उस पर वसुदल छाया
भूपुर तीन समेत चक्र रुचिकार बनाया ।
अरुण वर्ण का गन्ध पुष्प उपचार सुहाया
मंत्रराज अक्षर का सन्तत जाप बताया ।
श्री हरि पूरै काम ध्यान श्री बाला का । रूप कहा० ॥३॥

नम्बर ६१

भवानी अन्नपूर्णा में सदा जो लौ लगाता है
समझलो सत्य निश्चय वह सभी संकट भगाता है ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नमः श्री अन्नपूर्णा यै यही जप मात्र करता जो
स्वमन अनुसार वह सुखसे अयाचित अन्न पाता है ॥२॥
कहा है तंत्र शास्त्रों में कि साधक अन्नपूर्णा का
सभी धन धान्य सम्पत से भरा आकर कहाता है। ॥३॥
महेश्वर भी सदा भिक्षा इसी से प्राप्त करते हैं
तो फिर नर इस महा दातार मा को क्यों न ध्याता है ॥४॥
जगत की पालिका है यह महा माहेश्वरी शक्ति
बड़ा ही मूढ़ है वह जो यहां सन्देह लाता है ॥५॥
समर्चा इसकी जो साधक सदा सविधान करता है
निपट सोये हुए भी भाग्य वह जल्दी जगाता है ॥६॥
कहै श्री हरि महामाया महेशी अन्नपूर्णा के।
भजन से शीघ्र साधक का सितारा जगमगाता है॥७॥

नम्बर ६२

(त्रिपुर भैरवी प्रार्थना)

त्रिपुरा मा, ओ त्रिपुरा मा, महा भैरवी त्रिपुरा मा !
दुख दारिद्र्य शोक चिन्ताएं दूर करो हे त्रिपुरा मा ! ॥१॥
मन में शान्ति सौख्य उपजाओ, और हृदय में धैर्य दिलाओ।
दया सुधा हम पर बरसाओ, अपना भक्तिभाव सरसाओ।
बल विक्रम विवेक दे मनसा पूर करो ऐ त्रिपुरा मा ॥ त्रि० ॥२॥
मन मोहक है रूप तुम्हारा, शुचि शृंगार अनूप तुम्हारा।
मंत्र अतीव उदार तुम्हारा भजन, सदा सुखसार तुम्हारा।
काम क्रोध मद मोहादिक रिपु चूर करो ए त्रिपुरा मा। त्रि० ।३॥
शीस चन्द्रयुत मुकुट विराजैं, मन्द हास धुति से तम भाजै।
पुस्तक माल वराभय साजे, चार भुजाएं बहु छवि छाजै।
ज्ञान आपका हममें वह भरपूर भरो हे त्रिपुरा मा त्रि० ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिससे तत्त्व सनातन पावें, भक्ति शक्ति की खूब बढ़ावें
गुणगण विमल आपके गावें, अन्त आपमें आप समावें।
श्री हरि दुष्कृत दुर्गुण सारे दूर करो हो त्रिपुरा मा। त्रि०॥५॥

नम्बर ६३

देखिए अद्भुत झांकी परा मा छिन्न मस्ता की
तनु है लाल विशाल दिगम्बर वेश बना है।
धड़ ऊपर का दृश्य समूचा रूधिर सना है।
वाम पाणि अंभोज स्वयं का मस्तक सोहै।
दूजे दीप्त कृपाण तेज़ से दृग को मोहै।
प्रभा शोणित धारा की, देखिए अद्भुत झांकी ॥१॥
रति मन्मथ विपरीत पीठ पर आप खड़ी है
निज कबंध से एक धार निज बदन पड़ी है।
दो धाराएं युगल योगिनी मुख में आवे
मन में ऐसा दृश्य देखते अचरज छावे।
हद है भीषणताको देखिये अद्भुत झांकी ॥२॥
नर मुण्डों का हार गले आजानु विराजै।
कंचन कांची दाम दीप्त पद नूपुर बाजै।
कुलक्रम से जो करै निशामें इसकी पूजा
उस साधक के कहीं न हो प्रति पन्थी दूजा।
न हो सीमा महिमा की देखिये अद्भुत ० ॥३॥
शुचि त्रिकोण पर तीन वृत फिर योनि लिखावे
वसुदल भूपुर तीन यन्त्र यों रम्य बनावे।
कूर्चं बीज को मध्य लिखे फट युत कोनों में।
श्री हरि पूजे मनुज सिद्ध हो वह दोनों में।
बनै निधि सुन्दरता की, देखिये अद्भुत झांकी
परामा छिन्न मस्ता की ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भुवनेश्वरी स्तव नं० ६४

धरो मन भुवनेशी को ध्यान
करो इसके ही गुणगण गान, ॥टेर॥

पुरुष प्रकृति दोनों के मध्ये जलती अनल महान
उस पर चन्द्रकला है ऊपर बिन्दु नाद पहचान
बीज यह ही है मन्त्र प्रधान। धरो मन० ॥१॥

महा शक्ति यह महा महेशी तीनों गुण की खान
ब्रह्मा विष्णु शिवादि सुरासुर सब की जननी जान
इसे ही कहते ब्रह्म सुजान। धरो० ॥२॥

स्थावर जंगम सभी जगत है इस कृपाण का म्यान
यह इसमें प्रविष्ट है पूरण व्यापक खड्ग समान
चराचर का यों ही कर ज्ञान। धरो० ॥३॥

चित् संवित् माया सर्वेशी प्रकृति अव्यक्त प्रधान
नानाविध नामों से इसको कहते हैं विद्वान्
इसी को रहे परात्मा मान। धरो० ॥४॥

आदिसृष्टि में मातृ रूप से प्रगटी यह सच जान।
निश्चल दयानिधान विश्व को रचती है गुणवान
इसी का करते शास्त्र बखान। धरो० ॥५॥

रूपत्रिलोचन चार भुजायुत तनु छवि कनक समान
पाशांकुश वर अभय धारती मुखमधुरी मुसुकान
मुकुट पर शशि है सुधा निधान धरो० ॥६॥

प्रथम अष्टदल कमल बीच में एक लिखे षट्कोन
ऊपर षोड़श दल सरोज पर विरचे चौरस भोन
यन्त्र यह करता सिद्धि प्रदान धरो० ॥७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भुवनेश्वरी महामाया का जो जन करता ध्यान
पूजन जप होमादि सविधि वह पावे पद निर्वान
लिया श्री हरि ने निश्चय जान । धरो० ॥८॥

गजल कव्वाली (संस्कृत) नं० ६५

विश्वेश्वरि ! त्वदीयं पदपंकजं नमामः
दुर्गा शिवाऽम्बिकेति त्वन्नाम कीर्तयामः विश्वेश्वरि ॥ १ ॥
विद्या परात्वमेव त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी नः
रूपं परात्परं ते चिद्रूपमाश्रयाम: । विश्वेश्वरि ॥ २ ॥
अस्मासु चेतना त्वं रविमण्डले प्रभावत्
त्वत्तेजसै व मातः सर्वे वयं विभाम: । विश्वेश्वरि ॥ ३ ॥
मङ्गल्यवीजमेत त्तत्र दर्शनं मनोज्ञम् ।
यदि दीयते भवत्या धन्या वयं भवामः । विश्वेश्वरि ॥ ४ ॥
अयि दीयतां वरोऽसावस्मासु सम्प्रसद्य ।
आजीवमेव भक्तया भवतीं समाश्रयाम: । विश्वेश्वरि ॥ ५ ॥
त्वन्नाम कीर्तयन्तस्त्वामेव चिन्तयन्त :
त्वामेव पूजयन्तस्त्वामेव लोकयाम: । विश्वेश्वरि ॥ ६ ॥
देवा हरिप्रभृतयोऽपि त्वां सदा भजन्ति
तत्ते परं प्रभावं किमहो वयं वदामः । विश्वेश्वरि ॥ ७ ॥

नं० ६६

किया मा तुमने उत्तम काम ॥ टेर ॥

अंगरेजी न पढ़ाई, उर्दू का न सिखाया नाम ।
कालिज में बरबाद उमर कर विसराता निज धाम । किया० ॥ १ ॥
व्याह पूर्व ही ब्रह्मचर्य का चिथवा लेता चाम
दिन दहाड़ को एजूकेशन हर लेता सब दाम ॥ किया० ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घुड़की देता मा बापों को मुख रखता न लगाम।
फैशन के फन्दे पड़ रहता गर्वित आठों याम। किया० ॥ ३ ॥
शास्त्र वाक्य सुनता न समझता करता तर्क निकाम।
धर्म कर्म को झंझट गिनता देता नहीं छदाम। किया० ॥ ४ ॥
अमर भारती पढ़कर पाया है सब कुछ आराम
पूजा और प्रतिष्ठा पाई ऊँचा पाया ठाम। किया० ॥ ५ ॥
धर्म तत्त्व, वे शास्त्र वचन श्रुतियों के वाक्य ललाम।
देख देख कर समझ समझ कर मन पाता है साम। किया० ॥६ ॥
कविता कर जब अम्ब ! आपका गाता हूँ गुणगान
तब आनन्द मग्न हो समझूं तृण साम्राज्य तमाम। किया० ॥७॥
अब सुख शान्ति विपुल पाता हूँ, तव नहिं मिलता ड्राम।
श्री हरि के आनन्द सदा ही रहता दक्षिण वाम ॥ किया० ॥ ८ ॥

मातङ्गी स्तुति नं० ६७

वर देती अधिक उदार माया मातङ्गी। करती भवसागर पार माया०।
शीश मुकुट पर चन्द्रकला है, केसर कुंकुम तिलक भला है।
कुण्डल युग छवि अति विमला है, तेज त्रिलोचन का उजला है।
मुख मण्डल कान्ति अपार, माया मातङ्गी। वर देती अधिक०॥१॥
एक हाथ में खड्ग विराजे दूजे में खेटक छवि छाजै।
तीजा हाथ परशुको साजै अंकुश चौथे कर में भ्राजै।
तनु श्यामल अति सुकुमार, माया मातंगी। वर देती०॥२॥
कभी हाथ ले वीणा बजावे करै वेद प्रवचन समझावे।
लीला शुक को खूब रिझावे पद से नूपुर ध्वनि सरसावे।
साधक पावे सब श्रुति सार, माया मातङ्गी । वर देती०॥३॥
एक रुचिर षट्कोण बनावे ऊपर वर्तुल वृत्त लिखावे।
वसुदल पर भूसदन सजावे। यन्त्र बीच अम्बा को ध्यावे।
वह जन पावे सिद्धि अपार। माया मातङ्गी वर देती०॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मातङ्गी मा सब सुख दाता। अन्त सहज ही शिव पद पाता।
बनै वेद तन्त्रादिक ज्ञाता। जो इसके पद में मन लाता।
श्री हरि कहते तत्त्व विचार। माया मातङ्गी। वर देती० ॥ ५ ॥

प्रणव पूर्व फिर जानो माया। कामबीज फिर कर्ज लगाया।
मातंगी पद मध्य बिठाया। फट् स्वाहा युत, मन्त्र बताया।
जप से हो रिपु संहार। माया मातङ्गी। वर देती ॥ ६ ॥

धूमावती स्तव नं० ६८

सकल दुख ध्यान धरते ही हरै धूमावती माता
स्वभक्तों को सुखी ज्ञानी करै धूमावती माता ॥ १ ॥
खुले हैं केश रूखे से बदन में दाँत विरले हैं
स्व रथ पर कृष्ण काक ध्वज धरै धूमावती माता ॥ २ ॥
सुबह दीखे कुमारी जो वही मध्यान्ह में तरुणी
दिनान्ते रूप में वृद्धा बनै धूमावती माता ॥ ३ ॥
कुल क्रम से जो नर इसकी सपर्या में लगे इसके
कुसुम प्रतिभा के उपजाती घने धूमावती माता ॥ ४ ॥
गले में माल मुण्डों की लटकती जानुओं तक जो
सुमरते उनके रिपुदल को चरै धूमावती माता ॥ ५ ॥
समर्चा श्वेत उपचारों भरी इसकी जो करता है
उसे परतत्त्व का ज्ञानी करै धूमावती माता ॥ ६ ॥
रुचिर षट्कोण वसुदल और भूपुर यन्त्र लिख उसपर
जो पूजै उसके घर सम्पद् भरै धूमावती माता ॥ ७ ॥
जो जपता मन्त्र अष्टाक्षर इसे मानस में ध्याता है
सदा उस पर सुधाधारा झरै धूमावती माता ॥ ८ ॥
यही काली यही चण्डी यही है भैरवी दुर्गा
यही संकष्ट श्रीहरि का हरे धूमावती माता ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भगवती के सिंह की स्तुति, कवित्त घनाक्षर नं० ६९

विश्व की महेश्वरी के धारण सामर्थ्यवान
विष्णु ने बलिष्ठ सिंह देह स्वयं धारा है
क्रीड़ा प्रचण्ड कर जिसने रणाङ्गण में
विक्रम से दानवों के संघ को विदारा है।
जिसकी गम्भीर घोर रण में हुंकार सुन
महिष का शौर्य शीघ्र सूख-गया सारा है
केहरि स्वरूप उस श्री हरि का श्री हरि ने
नम्र हो प्रणाम आज भक्ति से उचारा है॥ १॥
नाम भयकारी और चाम चित्रकारी पूर्ण
काम दुष्ट दैत्य दर्प-हारी अविराम है।
शस्त्र नख और दाढ़, तेजधार पूर्ण गाढ़
केसरिया रंग देह धारी अभिराम है॥
शौर्य और घोर तर विक्रम का सागर जो
वन का राजेन्द्र महा साहस का धाम है।
श्री हरि कवीन्द्र उस चण्डी के वाहन को
हाथ जोड़ शीस झुका करता प्रणाम है॥ २॥

नं ७०

भगवती आयुध स्तव

(कवित्त घनाक्षरी)

अक्षमाला-ललित अनेक जगदण्ड पिण्ड मनके हों
जिसमें प्रतीत करै अनन्त अन्तराला को।
अंगुली की शोणप्रभा—रंजित उपरिभाग
जिसका नितान्त करै प्रहसित प्रवाला को।
विद्या के मनोरथ से सन्तत जो चिन्तित हो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करती है विनष्ट शीघ्र अविद्या विशाला को।
श्री हरि प्रणाम करै गौर २ गौज्ञ २
अम्बा की स्फटिकमयी दीप्त अक्षमाला को ॥१॥

कमल—सन्तत विकासी प्रभा जिसकी प्रभाव भरी
शोण शोण श्री का मनो-हारक संचार है।
मुग्ध मकरन्द पै हो मिलिन्द मडरावै जहाँ
करता जो समीर में सौरभ प्रसार है॥
त्रिश्व के विशेष रम्य लोचन मुखादिकों का
उपमा का सारभूत गुणों का आगार है
माहिषा विमर्दिनी के पुण्य पाणि पद्म स्थित
कमल को श्रीहरि के प्रणाम सौबार है ॥ २ ॥

बाण— जुड़ते ही चाप पर बिछुड़ाता दैत्य प्राण
सज्जन को दुर्जन के दम्भ से बचाता है।
सार पूर्ण पक्ष वान अपने 'कठोर' घोर
दण्ड को कराल काल व्याल सा दिखाता है।
अच्युत शिव विरिंचि और देवराज आदि
देव संघ नित्य जिसे पूज पूज जाता है
श्री हरि अम्बा के पाणि-पद्म पै प्रदीप्त ऐसे
बाण को स्वत्राण हेतु, मस्तक झुकाता है ॥ ३ ॥

खड्ग —असुरों के कण्ठ पीठ बाहु और वक्ष बीच
करता ही रहता है जो प्रवेश निर्गमः
चपला सा चंचलजो चमाचम चमकता है
हरता ही रहता जो तेज से जगत्तमः।
शोणित सुरङ्ग कहीं मेद पङ्क चर्चित है
भक्त परित्राण हेतु जो सदैव सूक्ष्मः
करै हरि चण्डिका के पाणि के प्रदीप्त उस
चारु चण्ड चन्द्रहास खड्ग को नमो नमः ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बज्र—नाम शतधार धरै तीव्र जो सहस्र धार
तेज पुञ्ज पूर्ण भानु-मण्डल सरीखा है।
देख देख दैत्य जिसे कम्प और झम्प खांय
हेम रत्न मण्डित जो दण्ड धरे तीखा है॥
समर बीच एक भी जिसका प्रघात पा
सैरिभ सा सबल शूर सौ सौ बार चीखा है
श्रीहरि अम्बा के हाथ सोहै उस वज्र को
करता प्रणाम कहो मुझे कौन सीखा है?॥ ५॥

गदा—सारपूर्ण स्वर्ण मयी दिखती जो नित्य नई
अम्बिका उपासकों को प्राप्त सम्पदा करै
विमुख भवानी से जो दुष्ट जन शीघ्र उन्हें
पाप ताप दैन्य दुःख भार से लदा करै॥
चण्डिका के हाथ साथ संगर में घूमती जो
मण्डल से दानवों को भीत सर्वदा करै
श्री हरि हरा दिके भी पूज्य आवरण में जो
वही सर्व मङ्गला की मङ्गल गदा करै॥ ६॥

चक्र—अच्युत ने भेंट किया चेतन सुदर्शन का
तीव्र दिव्य तेज रूप धरता ललाम है
ज्वाल माला से कराल दैत्य वृन्द हेतु काल
भक्त प्रतिपाल करै सर्व गुण धाम है
जागरूक ज्योतिमान दीप्त भानु मण्डल सा
नाम से सुदर्शन पै दर्शन से वाम है
श्रीहरि विरंचि आदि चर्चित चामुण्डा के
चारु चटुल चक्र को सैंकड़ों प्रणाम है॥ ७॥

त्रिशुल—त्रिलोकी की विपदाएं एक साथ हरने को
त्रिविध शलाका रूप धरता ललाम है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुजन सहायक जो देता दुःख दुर्जनों को
देव वृन्द वन्दित जो दिव्य तेज धाम है
जिसका विशाल दण्ड हेम जाल मण्डित है
ज्वाल माल से कराल बैरियों को वाम है
श्रीहरि कवीन्द्र उस महिषविमर्दिनी के
सव्य पाणि शोभित त्रिशूल को प्रणाम है ॥८॥

परशु—देव शिल्पी ने अनल्प कल्पना गुणों की कर
तेज तीव्र धारवान जिसको बनाया है।
भक्ति पूर्ण नम्र शिरा होकर जगदम्बा के
दैत्य दल दारण को भेंट में चढ़ाया है॥
अष्टमी मृगाङ्क जैसा गगन रणाङ्गण में
दानव तमिस्र पुंज जिसने नसाया है
श्रीहरि ने अम्बिका के पाणि पर दीप्यमान
परशु को कई बार मस्तक झुकाया है ॥ ९ ॥

शङ्ख—क्षीर हीर हार हर-हास हिम रश्मि जैसी
जिसके शरीर पर शोभा सरसाती है
संगर में चण्डिका की फुंकृति से नादित हो
हुंकृति से दानवों की देता फाड़ छाती है।
रण में गम्भीर और जिसकी सुधीर ध्वनि
सुन सुन अप्सराएं पुष्प बरसाती हैं।
चण्डिका के पाणि पर सोहै उस शङ्ख को
श्रीहरि की भक्ति आज शीस झुकवाती है ॥१०॥

घण्टा—घन सी कठोर घोर गूँजती रण-स्थल में
करती है दानवों के तेज का विशेष क्षय
ओज उकसाती देव वृन्द का अमन्द शौर्य्य
साहस बढ़ाती और तत्क्षण दिलाती जय
जिसका निनाद सुन वैरि वृन्द बहरे हों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्रस्त हुए अस्त व्यस्त भागते गयन्द हय
श्री हरि प्रणाम करै ऐसी जगदम्बा की
घन्टा को तुरन्त वही हरैगी समस्त भय ॥११॥

पाश—भेट कियो भक्तिपूर्व वारिके अधीश्वर ने
नागराज के समान भीषण प्रकाम है
बल से बलित मुख कण्टकों से कलित है
जिसका विशाल फन्द बैरियों को वाम है
वेगपूर्ण पड़ते ही कन्धरा पकड़ प्राण
असुरों को पहुँचा ही देता यम धाम है
ऐसे उस चन्डिका के हाथ में समुल्लसित
पाशराज को श्रीहरि करता प्रणाम है ॥१२॥

शक्ति—अग्नि के सुतीव्र तेज-पुञ्ज परिपूर्ण और
जिसका विशाल फाल काल सा करारा है
जिस पै लगाई गई उल्वण विषों की पाण
अरत्नि प्रमाणयुत धरै तीन धारा है
जिसका प्रचण्ड दण्ड हेम रत्न मण्डित है
समर में कई कोटि दैत्य उर फारा है
श्री हरि ने उसी महालक्ष्मी के कर गृहीत
शक्ति को प्रणाम आज भक्ति से उचारा है ॥१३॥

दण्ड—नालदण्ड है क्या यह विरंचि के पंकज का
अथवा गगन रूप छत्र का आधार दण्ड
क्या यह संसार चक्र-चालन का काष्ठदण्ड
यन्त्र मन्त्र चेटकादि जादू का प्रचार दण्ड ॥
पाप परिहार दण्ड अथवा है काल दण्ड
या है चण्ड मुण्ड आदि दैत्यों का संहार दण्ड
देख देख जिस पै यों ध्यान कई उदित हों
श्रीहरि का क्षेम करै वही मायाऽऽधार दण्ड ॥१४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चर्म (ढाल)-आदि कच्छप की पीठ काठ छांट गोल कर
आदि काल महाकाल स्वयं ने बनाई है
सारस्वत कल्प मध्य महिष के समर में
चण्डिका के बांये हाथ धारण कराई है
जिस पर सुवर्ण के रत्नों से जटित चारु
चार चन्द्रमाओं की शोभा सरसाई है
श्रीहरि विशाल वह ढाल सिंह-वाहिनी की
काल चक्र टालने को रक्षक सदा ही है ॥१५॥

चाप—वज्र सा कठोर घोर दण्ड कोटि दोनों ओर
बिच्छी के डंक सदृश टेढ़ा बल खाया है
कर्कश टंकार कर जिसने रणाङ्गण में
कई बार दानवों के दल को दहलाया है
मारुत ने मनोज्ञ जो अम्बा के अर्पण किया
स्वर्ण जाल मण्डित जो रत्नों से जड़ाया है
श्रीहरि ने चण्डिका के पाणि पर राजमान
त्रिताप हर चाप को मस्तक नवाया है ॥१६॥

पान पात्र—सुघड़ सुडोल और गोल अनमोल प्रभा
जिसकी माणिक्यमयी फैलती विशाला है
सेवा में समर्पित जो किया है धनेश्वर ने
बाहर विचित्र चित्रकारी से निराला है ॥
पावन प्रथम तत्त्व पूरण पीयूष सार
जिसमें प्रमोद करी दिव्य भरी हाला है
श्रीहरि जगदम्बा के वाम पाणि शोभमान
पंकज में पंकज सा पूजनीय प्याला है ॥१७॥

कमण्डलु—हीरे का विशाल खण्ड काट छाँट कुर्च कर
देव शिल्पि ने पटुत्व-पूर्ण रच पाया है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समर्पित स्वयम्भू ने समादरपूर्ण किया
वारि गगन गंगा का जिसमें समाया है
जिसकी जल बूँदों ने समर में बज्रवत
दानव दलों का दर्प खूब विन साया है
श्रीहरि उस चण्डी के कोमल कर कंज में
कलित कमण्डलु का दृश्य मन भाया है ॥१८॥
श्रीहरि कवीन्द्रकृत सैरिभसंहारिणी के
अठारह आयुधों के जो कवित्त गावेगा
मनुज सानन्द वह एक दृष्टि मात्र ही में
अपने समस्त बैरि वृन्द को झुकावेगा।
अंजलि पुष्पों से भर कवित्त का पाठ कर
भिन्न भिन्न शस्त्रों पर भक्ति से चढ़ावेगा
उसके दुख दूर होंगे इष्ट भरपूर होंगे
सर्वदा सुखी हो खूब मंगल मनावेगा ॥१९॥

इति श्री कविभूषण पं० श्री हरि शास्त्रीविरचित भगवत्पायुधस्तत्रः।

अम्बा अश्यघाटी स्तुति नं० ७१

माता तुम्हे जग-विधाता समस्त वर दाता विचार कर जो
ध्याता वही स्वमन भाता हुवा सुफल पाता तुरन्त जगमें।
गाता हुवा गुण अघाता न जो नित रिझाता रहै जन तुम्हें।
ज्ञाता वही परम, जाता वहीं फिर न आता जहां पहुँच के ॥१॥
माया प्रधान शिव जाया तुम्ही प्रकृति छाया त्रिधा स्वगुण से
काया प्रपंच उपजाया तथैव ठहराया सदैव करती।
पाया हुवा दुख दबाया तथा सुख दिखाया अनन्त तुमने
गाया गुणौघ पर पाया न पार थक आया सहस्र मुख भी ॥२॥
काली तथापि उजियाली करै किरण माली सहस्र सम जो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लाली भरे नयन वाली तथा पि करुणा लीन दृष्टि जिसकी ।।
व्याली मयी श्रवण वाली धरे नर कपाली-विभूषण गले
आली समेत त्रिकराली प्रसन्न वह काली रहो जगत पै ।।३।।
श्यामा त्रिलोक अभिरामा तुम्ही गिरिश वामा परात्पर तुम्हें
यामाष्ट जो नर प्रणामादि पूर्व निजवामा समेत भजता।
कामादि पा, प्रथित नामा वही नर ललामा ऽऽकृति प्रभु बनै
रामा रमा सम सदा मानिता त्रिदश धामाग्र में वह रहै ।।४।।
पाला समस्त जग टाला अनेक दुख वाला महा समय भी
कालाऽति क्रूर बल वाला निशुम्भ दल डाला तुरन्त जिसने।
हाला भरा कनक प्याला महेन्द्रमणि जाला सम द्युति धरे
बालाम्बिका तनु विशाला कदम्ब मृदु माला धरे मन बसो ।।५।।
नीला कभी सित कभी लाल कान्ति चमकीला विशाल लघु वा
पीला कभी बहु छबीला मनोहर गठीला कराल मृदु वा।
गीला सुधासय रसीला नितान्त नरमीला शरीर धरती
ढीला समस्त गरबीला खलौघ कर लीला करै भगवती ।।६।।
धारा स्वरूप दशधा राम आदि अवतारानुसार हरि ने
मारा प्रचण्ड बलका रावणादि दल आराधिता कर जिसे।
प्यारा अतीव सुकुमाराङ्ग वेद शुचि सारार्थ रूप जिसका
सारा हरै दुख हमारा उदार वह तारा परा भगवती ।।७।।
ध्यावे धनेश गुण गावे गणेश मन लावे महेश उसमें
पावें प्रसाद हरि आगे सदा स्तुति सुनावे अनेक उसको
भावे न मोद मन भावे सदैव समझावे चरित्र उसका
आवेगपूर्ण अपनावे कृपा कण छुवावे जिसे भगवती ।।८।।
तारे उसे सुर सहारे लगा दुख निवारे अनेक उसका
मारे न मौत घर द्वारे न जांय गद सारे मिलें सुख उसे।
हारें अशेष रिपु जारें न अग्नि डर धारे उसे सुर वधू

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धारें तनू जय उचारें कृपा कर निहारें जिसे भगवती ॥६॥
आती अनेक बरसाती मदाम्बु गज पांनी रहै अजिर में
गाती गुणौघ हुलसाती स्वनृत्य दिखलाती रहै युवतियां।
भाती अतीव सरसाती धरा पर न माती सुकीर्ति उसकी
ध्याती श्रियाँ पति बनाती उसे स्मरण आती जिसे भगवती ॥१०॥
बाँचा करै विरुद वाचा, कवीन्द्र कविता चारु चारु रचते
याचा करै नित कृपा चार बूंद सुर आचार्य आकर जिसे।
लाचार हो सब समाचार दें सुर सदा चाटु तत्पर रहैं
आचार और मन वाचा सदा स्मरण साँचा करै मनुज जो ॥११॥
पढ़ै सुने जो ध्यान से हरिकृत हयगति छन्द,
जगदम्बा उन पर सदा कृपा करै सानन्द ॥११॥

लावणी महामाया—महिमा की नं० ७२

जगदम्ब ! तुम्हारी समझ पड़ी नहिं माया, ।
क्या क्या अचरज दिखलाया। जगदम्ब ! ॥टेर॥

मूल प्रकृति गुण रूप धार सब जग की जननी आप हुई।
अंश कला से तनु धर हरि हर विधि की घरनी आप हुई।
नाद कला अव्यक्त प्रणव बन तुम्ही मन्त्र जप जाप हुई।
स्वेच्छा से चेतन रूप धार तत्त्वों की प्रेरक आप हुई॥
कैसा गुणजाल बिछाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १ ॥
सृष्टि स्थिति संहार कार्य में उन्हें प्रेरणा करती आप
वे तुमसे बल वैभव पाते उनका संकट हरती आप।
उनमें रहकर उनके बाहर रूप निराला धरती आप
तीन पाँच नौ सोलह बीस पचीसों बीच विचरती आप
क्या अद्‌भुत खेल रचाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ २ ॥
पूर्ण अखण्डानन्द परात्मा तुमने व्योम रचा कैसे
निराकार तुमने बाहू बिन विस्तृत इसे किया कैसे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रूप रहित भो इसको तुमने कैसे अपना रूप दिया
पाँचो में प्रधान बतलाया सर्व व्याप्त अनन्त किया
आधार बिना ठहराया, जगदम्ब ! तुम्हारी समझ० ॥ ३ ॥
श्वास रूप मारुत को इसमें कैसे चंचल अचल किया
और वायु से हे विश्वेश्वरि ! कैसे उद्गत अनल किया
तथा अग्नि से जल; जल में फिर कैसे भू को अटल किया
घन चेतना शक्ति अपनी दे, इसको सन्तत सबल किया।
सब महाभूत कहलाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ पड़ी० ॥ ४ ॥
पंचीकरण हेतु फिर इनके कैसे भाग बनाती हो
एक एक में पाँच पाँच दे सर्व प्रपंच रचाती हो
विश्व चराचर रंग विरंगा चित्र विचित्र सजाती हो।
पर्वत पशु पंछी तरू लतिकाओं का ढंग जचाती हो
सब में गुण भाव भराया, जगदम्ब तुम्हारी समझ ०॥ ५ ॥
पंच महाभूतों के गुण मय अंशो से इन्द्रियां रची
प्राण बनाये कैसे दशविध कैसी मन वृत्तियाँ रची।
मन मति चित्त अहंकृति चारों अन्तः करण रचे कैसे
माया और अविद्या ये दो प्रकृति विभेद बने कैसे ॥
कैसे प्रति बिम्ब गिराया, जगदम्ब तुम्हारी समझ पड़ी० ॥ ६ ॥
ईश्वर और जीव जन जनमें कैसे भिन्न बनाए मा
एक एक का अंश रूप कर फिर कैसे बिलगाये मा।
स्त्री तनु से ही पुरुष प्रगट कर द्वैताऽद्वैत दिखाये मा
कर्म जाल के तन्तु जगत में कैसे प्रबल बनाए मा
सृष्टि का स्रोत बहाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ ७ ॥
तनु पर प्राणी के चर्म मंढा टाँके का कर्तव किया नहीं
आँख कान मुख कण्ठ कुहर कर दिये न वर्मा दिया कहीं
हाड हाड का जोड़ जुड़ाया गोंद लगाया कहीं नहीं

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दांत और नख रोम उगाए, बीज बताया कहीं नहीं
सांस पर सांस चलाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ ८ ॥

हर तनु में रोके प्राण रखे साँकल रस्सी का नाम नहीं
हां आग नियत की उदर बीच पर पड़ा फूंक का काम नहीं।
तनु के माफिक दे खान पान लेती हो एक छदाम नहीं
रात दिवस सब कार्य चले पर कार्यालय का धाम नहीं
कैसा प्रबन्ध करवाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ ९ ॥

रंग रंग के फूल बनाए दिखलाती रंगसाज नहीं
हरे भरे वन सजे भूमि पर जिनका कुछ अन्दाज नहीं
पान पान पर काट छांट की रखी न कैंची पास कहीं
नपा तुला यह देह बनाया बाट तराजू खास नहीं।
कैसा अन्दाज लगाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १० ॥

निशिदिन रवि शशि की ज्योति जगे पर दिखती धूँआधार नहीं
पृथ्वी को विरचा गोल गोल पर रखा हाथ परकार नहीं।
नभ में नक्षत्र विचरते हैं पर उनके पाद प्रसार नहीं।
मारुत वस्त्रादि उड़ाते हैं कर उनके भी दो चार नहीं।
सामर्थ्य अनूप दिखाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ ११ ॥

सुनते हैं साँप सभी बातें उनको देती हो कान नहीं
मृग मोर बाघ में रंगभरे वहु जिनका अनुसन्धान नहीं।
आते जाते हैं जीव परं होने देती हो भान नहीं
छिन छिन में देह बढाती हो रखती हो यन्त्र विधान नहीं।
पटुता का पार न पाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १२ ॥

घड़ी यन्त्र सम इस तनु में नस नस करती हैं काम सही
उपराम नहीं होता क्षण भी चाबी भरने का नाम नहीं।
पानी में जगत बसाती हो गलता सड़ता है चाम नहीं

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबके जगती है भूख प्यास पर दिखता इनका धाम नहीं।
बहुभाँति अन्न उपजाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १३ ॥

जग के आकार अनेक घड़े पर हाथ हथोड़ा लिया नहीं
सब अंग समान रचे सबके पर मिलता जोड़ा किया नहीं
पैदा जग धान समान किया हल बैल कहीं भी साथ नहीं।
खुद फिर इसे पालती, गैरों को देने देती हो हाथ नहीं।
संहार भाव दरसाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १४ ॥

फल पुण्य पाप का यथा समय देती करती हो भूल नहीं
क्या ? कहूँ अधिक मां आप बिना इस जग का कोई मूल नहीं।
जिसमें न आपकी सत्ता हो ऐसा कोई फल फूल नहीं
हो तुम्ही विश्व के कण कण में तुमसे कोई प्रतिकूल नहीं॥
व्यापक प्रभाव फैलाया, जगदम्ब ! तुम्हारी समझ० ॥ १५ ॥

भूतों में भूत, गुणों में गुण तुम ही हो सबका सार सही
मानस को निर्मल करती हो देती साबुन या खार नहीं।
परिबोध चित्त में भरती हो जिसकी न टूटती धार कहीं।
सत चित् संवित् आनन्द रूप हो तुममें कोई विकार नहीं॥
यह सभी वेद में गाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ पड़ी० ॥ १६ ॥

पृथ्वी में तुम हो व्याप्त शिवे ! पर इसे तुम्हारा ज्ञान नही
जल में रस रूप तुम्हीं हो मा पर इसे तुम्हारा भान नहीं।
तुम्ही अग्नि की ऊष्मा हो यह उसको अनुसन्धान नहीं।
हो वेग वायु में तुम ही पर मारुत को इसका ध्यान नहीं।
अव्यक्त तन्त्र प्रगटाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १७ ॥

आखों की आँख तुम्ही हो मा कानों का कान तुम्ही तो हो।
रसना की रसना तुम्ही देवि नाकों का नाक तुम्ही तो हो।
मन का मनन बुद्धि का बोधन चित्त का चेत तुम्ही तो हो।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अहङ्कार का अहंकार वेदों का वेद तुम्ही तो हो।
निज को सर्वत्र बसाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १८ ॥
तुम नियति रूप हो मा तो भी तुमको नियमों का बन्ध नहीं
कर्ता की कृति हो तुम्ही देवि तुम पर कर्मों का फन्द नहीं।
गुणवान गुणी की गुणना हो रखती गुण का कुछ गन्ध नहीं
तुम परं ब्रह्म की स्फुरणा हो तुम विन जग में आनन्द नहीं॥
निश्चय विवेक बतलाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ १६ ॥
आपामर विधि हरि हर तक देती हो तुम ही ज्ञान सही
अम्ब तुम्हारी आज्ञा को देते ये शिर पर स्थान सही।
करते सब काम नृपालों की आज्ञा से दास समान सही
प्रभुता पाते हैं तुमसे तुमको कहते विश्वनिदान सही।
तुम्हीं मूल प्रकृति माया, जगदम्ब तुम्हारी समझ० ॥ २० ॥
महिमा ऐश्वर्य तुम्हारा वे सब समझें पूर्ण प्रताप नहीं
मैं पामर मतिमन्द आपका क्या कह सकूं प्रभाव सही।
इस कारण श्रीहरि पर हरि के तुल्य कीजिए कृपा यही
मन में ज्ञान ज्योति जागृत हो ममता मोह न रहे कहीं।
तुम्हारा ही आश्रय पाया, जगदम्ब तुम्हारी समझ पड़ी० ॥ २१ ॥

अम्बिका महिमा, कवित्त घनाक्षर नं० ७३

एक भी प्रणाम किये देती है वैभव पूर
मन में पर तत्त्व का प्रकाश उपजाती है।
साधक के पाद पद्म पुजवाती नरेन्द्रों से
ऋद्धि और सिद्धियों को चाकर करवाती है।
बढ़ाती प्रताप चट चढ़ाती गजेन्द्रों पर
शीस चन्द्र चारु छत्र चामर चलवाती है
ऐसी भुवनेशी मात पण्डित सभा के बीच
सर्वदैव श्रीहरि को विजय दिलवाती है ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सवैया—

कसकात कमट्ठ की पीठपटी हिलने डुलने लगजात धरा,
फंस जात फणी फण आपस में छहरात समन्दर छोभ भरा।
ढह जात बराह की डाढ़ रवी विसरात निजी पथ भूल परा
पुलकात हरी, जब काली कराल करै कर में करवाल खरा ॥ २ ॥

उठती उदण्ड क्रूर क्रान्ति वायुमण्डल में
व्योम बीच ओज की तरङ्गें तर लाती हैं।
दो पचास भैरवों की मूर्ति भयकारी होत
चार साठ जोगनियां कराल किलकाती हैं।
देवगण दीप्यमान होत दैत्य छीन प्रान
अप्सरा विमान चढ़ पुष्प बरसाती है
कहते हैं विजयतां, श्रीहरि कवीन्द्र जब
चण्डिका प्रचण्ड सिंह पीठ बैठ जाती है ॥ ३ ॥

साधक प्रणाम पीछे करता है हृदय में
पहले ही विवेक का सूर्य उग आता है।
चरचा समर्चन की पीछे होय पहले ही
सिद्धि संघ संमुख आ नृत्य दिखलाता है।
मन्त्र जप हेतु हाथ माला पर जाय पीछे
पहले ही शत्रुवृन्द मस्तक झुकाता है
कहता है विजयतां श्रीहरि कवीन्द्र पीछे
मनोरथ पहले ही सिद्ध हुवा पाता है ॥ ४ ॥

भ्रकुटी के साथ साथ शेष बल खाने लगे
दृष्टि संग दिशाओं में लालिमा प्रसार होत।
ओठ की अणी के साथ कूर्म पर दाब पड़ै
श्वास के साथ तपित विश्व की बयार होत

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उठती कृपाण संग नो करोड़ शक्ति संघ
व्योम बीच भाल संग दीरघ दरार होत
श्रीहरि धरा के साथ दैत्य-गण काँप उठे
चण्डिका भवानी जब सिंह पै सवार होत ॥ ५ ॥

बादल प्रलय के हों गर्जत कठोर घोर
असुरों पर काल की क्रूर किलकार होत।
कम्प जात भूमि और झंप खात भानु बिम्ब
दसों दिशा लुप्त होत दिग्गज चिंग्घार होत।
नो करोड़ शक्तियों की चंचला चमक भरी
दोनों ओर धारदार तेज तलवार होत
श्री हरि हुंकार करै, चण्ड मुण्ड मारबे को
चण्डिका भवानी जब सिंह पै सवार होत ॥ ६ ॥

विरंचि के लोचन में अंजन लगाती स्वरा
विष्णु शीस गूँथ रमा वेणी बँधवाती है
अद्रिसुता शंकर की सिन्दूर से माँग भरे
पुलोमजा सुरेश को बेसर पिन्हाती है
वाराही नृसिंही आदि शक्तियाँ सुरों की सब
पुरुषों का रूप तज नारी बन आती है
श्रीहरि कवीन्द्र कहै शुंभ वध हेतु जब
भवानी की भयङ्कर भोहैं चढ़ जाती हैं ॥ ७ ॥

क्षुब्ध हुए क्षीर सिन्धु मध्य वारि बिन्दु जिमि
वैष्णवी शक्तियां जहां सायुध समाती है।
ऐसे ही महेन्द्री आदि शक्तियां सुरों की सब
स्वयं समाकृष्ट हो न रूप रख पाती हैं ॥
दारुण सुदीर्घ दृढ़ डाढ़ भरे जबड़े में
आपही आ दैत्य राशि घुसी पिसी जाती है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्व प्राण खींच हरे शुंभ के समर बीच
चण्डिका विराट जब रूप दरसाती है ॥ ८ ॥
गणेश और भैरव विघ्नभय दूर करैं
योगिनी जबरदस्त शत्रु को पछारती ।
योग क्षेम प्राप्त करैं विष्णु भगवान स्वयं
गेह और देह तक इन्दिरा सँवारती ।
श्रीहरि कवीन्द्र कहैं मंगल महेश करै
सिद्धियाँ पदाब्ज पूज आरती उतारती
सम्पत सुरेश उपहार दे सदैव उसे
कृपा दृग डार जिसे चण्डिका निहारती ॥ ६ ॥

श्रुतियाँ अशेष शुद्ध बुद्धि में प्रवेश करैं
स्मृतियाँ सब उसी की स्मृति में पधारती ।
पढ़ते हैं पुराण भी उस ही की धारणा में
दर्शन दसों ही शीघ्र दिव्य दृष्टि धारती ।
यन्त्र तन्त्र उस ही की चारू चटुल चेष्टा हो
मुख में निवास करै मन्त्र मय भारती
श्रीहरि चराचर में वही चमत्कार भरैं
कृपा दृग डार जिसे चण्डिका निहारती ॥ १० ॥

भरसक प्रयत्न भी करके प्रलय रूप
धरके कदापि उसे वह्नि नहीं जारती
मुशल क्या स्तम्भ धार वर्ष कर लगातार
त्रिलोकी की वारि राशि भी न उसे गारती ।
झंझा प्रकम्पन आदि एक क्या समूचे बात
मिलकर किसी भाँति रंच भी न टारती
श्रीहरि कवीन्द्र उसे मौत भी न मार सके
कृपा दृग डार जिसे चण्डिका निहारती ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रथ्वी तलातल में खिसकती जाय और
जाते हैं उड़ उड़ ये ऊपर पहाड़ सब।
प्रलयानल ज्वाला की प्रचण्ड परिताप पाय
सूख गये सागर की दीखै मझार अब।
द्यावा और भूमी का ही खुलता है सम्पुट क्या
करते यों विस्मय से देवता विचार तब
श्रीहरि संहारवे को रक्तबीज सृष्टि सारी
कालिका कराल करै आनन विस्फार जब ॥१२॥

नम्बर ७४

एरी जगदम्बा मेरी वेर क्यों लगाई देरी
सुरत तिहारी हेरी तेरो कहलाऊं मैं,
बिरद विख्यात कोई शत्रु रह जात नहीं
फिर कैसे वैरिगात स्वस्थ देख पाऊं मैं।
हरि कहै खड्ग धार कर में कटार चाहे
सिंह पै सवार बेगी आ उरी बुलाऊं मैं
अक्षत कुसुम का ले पाले उपहार आ ले
करले कलेवा बलि बैरी का चढाऊं मैं ॥१॥
जागती ही जोति है तू कभी नहीं सोती सुनी
सोती होय तो आज शीघ्र जगजाए मा।
विरद तिहारो दास होत न दुखारो कभी
दुर्जन दायाद फिर वैरि क्यों बनाए मा।
चण्ड मुण्ड मारे रक्त बीज चूसि डारे जिमि
मेरे इन वैरियों के मस्तक मिटाए मा।
श्रीहरि कवीन्द्र कहै बीत गये दुःख दिन
अब तो समय शीघ्र सुख का दिखाए मा ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कालि हे कराल मुखि, काट कष्ट जाल, सुखी
सेवक सदैव रख दुर्जन दबाए जा ।
वैरियों के रुण्ड मुण्ड खण्ड खण्ड चण्डि कर
अन्त्र जाल ऐंचि ऐंचि शिवा को खवाए जा
ओ ए मुण्डमाल वाली उग्र प्रभाजाल वाली
कविता लता के नित कुसुम खिलाए जा
श्रीहरि कवीन्द्र कहै दिलाए जा ज्ञान मान
भक्त परिपालन को बिरद निभाए जा ॥३॥

माता तू जगत की है तो पुत्र मैं तुम्हारा हूँ
विद्या तू स्वयं है तेरा साधक रहा हूँ मैं
गुरु तू विश्व की है तो शिष्य निज जान मुझे
दया सुधा सिन्धु है तू प्यास से तपा हूँ मैं ।
शरण्य तू प्रसिद्ध है तो, मैं शरणागत हूँ
वैद्य रस सिद्ध है तू, रोग से दबा हूँ मैं
दानी जगमानी तू मैं याचक हूँ जो उचित
होवे कर वही अम्ब ! द्वार पै पड़ा हूँ मैं ॥४॥

ओ ए शरणागत पै करुणा करनहारी
मेरे अपराधों पर ध्यान न लगाओगी
लगाओगी अगर, तो अमित होने के हेतु
गिन नहीं पाओगी औ समय गमाओगी ।
क्षमा का स्वरूप है तू क्षमा में विराजती है
अपना विरुद मात ! आप ही निभाओगी
होते हैं कपूत पूत माता हो कुमाता नहीं
ऐसा जान श्रीहरि को क्षमा ही दिलाओगी ॥५॥

ध्याऊँ न मनाऊँ गुण, गाथा भी न गाऊँ मात
सेवा के लिए भी निज चित्त न लगाता हूँ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मन्त्र जप ध्यान अर्चा चर्चा कर पाऊँ नहीं
यन्त्र तन्त्र साधन क्या स्तोत्र न सुनाता हूँ।
खैर किया करती तू सैर किया करता मैं
अपनी अहंकृति का गन्ध महकाता हूँ
श्रीहरि खयाल जब लाता हूँ स्वदोषों पर
याद कर तुम्हें तब मस्तक झुकाता हूँ ॥६॥

अर्ज सुन मात मेरी तेरी मैं शरण हेरी
तेरे द्वार आ पड़ा हूँ कोई उपाय कर,
तेरा कहलाऊँ अब तुझे छोड़ जाऊँ कहां
कोई भी न मेरा यहाँ देखा अपनाय कर
मात नहीं तात नहीं बन्धु नहीं मित्र नहीं
दारा सुत स्वार्थ नित साधै अघाय कर
श्रीहरि कुपूत हूँ मैं कुमति कुचाली पर
तेरो हूँ भवानी अब तू ही सहाय कर ॥७॥

आए मा मृडानी वरदानी महारानी ख्यात
मेरे मन मन्दिर में आसन जमाए मा!
जमाए मा रंग ढंग तेरे पद पूजन का
समुज्वल विवेक की ज्योति को जगाए मा।
जगाए मा सोती हुई मेरी सुर भारती का
मुझको स्वरूप मधु माधुरी पिलाए मा!
लाए मा सुख समृद्धि श्रीहरि कवीन्द्र कहै
दुरित दुर्भाग्य दूर करती हुई आए मा! ॥८॥
गाए जा गिरिजा गुण एरे मन मनीषा से
पाणी से पदों पै पुष्प भाव के चढाए जा,
ढाए जा विघ्न भित्ति दर्शन कर दुर्गा के
अपनी इन आंखों को सफल बनाए जा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नाए जा मस्तक और मन्त्र जप मध्यमा से
करता कृत कर्मों को कहीं पै खपाए जा,
पाए जा प्रसाद नित श्रीहरि जगदम्बा का
ध्यान धर भवानी में भावना लगाए जा ॥६॥

सुन्दर शृंगार सजी वेश्या को निहार थक्यो
ललिता भवानी की न छबि को निहारी तू
धनिकों की झूठी चाटुकारी भरे गाए गीत
अंबिका की स्तुति नहीं चित्त से उचारी तू।
निन्दन पराए सुन कानों को पिराए वृथा
चण्डिका को कीर्ति कथा नहीं मन धारी तू
श्रीहरि धिक्कारते हैं आंख जीभ कान तुझे
बार बार रंक हो वा राजा छत्रधारी तू ॥१०॥

एरे मन मूढ मेरे चक्कर घनेरे लगा
देवता न और कोई पायगा भवानी सा
देख देख आवे नित लोग भरमावे तुझे
टिक नहीं पावे कहीं देव में अमानी सा।
चंचलता छोड़ मुख मोड़ दंभ दोषों से
अम्बिका पदाब्ज पूज प्रणय कर ज्ञानी सा
श्रीहरि सिखावे मूल प्रकृति कहावे यही
जीव मिल जाय यहीं दूध बीच पानी सा ॥११॥

—०:समाप्तः०—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिशिष्ट

भजो मन राधा महारानी

एक अनादि तत्त्व रूपा यह, यही मुक्ति की दानी
योगी यति मुनियों सन्तों ने विद्या इसे बखानी । भजो मन० । १ ।

ब्रह्म विवर्त पुराण और श्री गर्ग महामुनि ज्ञानी
इसकी महिमा उज्जवल मन से जानी और जतानी । भजो० । २ ।

इसकी माया कहते कोई प्रकृति इसे पहचानी ।
इच्छा क्रिया सिसृक्षा ईक्षा कहते वेद प्रमानी । भजो० । ३ ।

इससे मुह मोड़े वह पावें मुक्ति मुक्ति की हानी ।
देखे सुने पडे माया के विवश ब्रह्म विज्ञानी । भजो० । ४ ।

अर्जुन की मति इस माया ने क्षण में मोह फंसानी
पाई हुई विजय वर की वह सारी बात भुलानी । भजो० । ५ ।

यही कृष्ण की प्राण शक्ति है वेद पुराण बखानी ।
इसे जान कर और ध्यान कर मुक्त हुए बहु ज्ञानी । भजो० । ६ ।

विद्या माया रूप इसी को काम धेनु कह मानी ।
ईश जीव दो वत्स इसी के यह सत् चित् जग जानी । भजो० । ७ ।

राधा सर्वानन्द रूपिणी शक्ति भक्त सन्मानी ।
इसके बिना भक्ति भगवत की सूनी भूमि मसानी । भजो० । ८ ।

जिसकी मुख्य उपास्य देवता है राधा महारानी ।
श्री हरि इसका जन्म सफल है सृष्टि उसे सुखदानी ॥ भजो० । ९ ।

२ जयति जयति श्री दुर्गानाम

सब प्रकार के कल्याणों का है निधान श्री दुर्गा नाम ।
और सभी विध हर्ष सुखों का है विधान श्री दुर्गा नाम ॥१॥जयति०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२)

सभी समृद्ध सम्पदाओं का एक हेतु श्री दुर्गानाम
दुख सागर से तरने का है एक सेतु श्री दुर्गा नाम ।।२।।जयति०
भवकी भीति मिटा देने का एक मूल है दुर्गा नाम
रोग-दैत्य विद्रावण के हित शिव-त्रिशूल है दुर्गा नाम । ३ ।जयति०
निर्बल में बल भरने वाला एक मन्त्र है दुर्गा नाम
ओज तेज उत्साह वृद्धि का एक तन्त्र है दुर्गा नाम । ४ ।जयति०
ज्ञान और विज्ञान लाभ का सत् कारण है दुर्गा नाम
श्री हरि सकल दुरित दोषों का परिहारण है दुर्गा नाम
जयति जयति श्री दुर्गा नाम ।।५।।

(३)

दुर्गे देवि दया कर जल्दी दुखियों का दुख मेट शिवे !
अन्धकार अज्ञान फैलता इसको तुरत समेट शिवे ।। १ ।।
हम बालक नादान, दयानिधि हमको रखिए पास शिवे
आप पतित उद्धारण, हम हैं दीन आपके दास शिवे !।। २ ।।
देओ सुमति हमें हम जिससे गाँय सदा गुण गान शिवे
उपकारी हो प्राणिमात्र के और बनैं गुणवान शिवे ।। ३ ।।
विद्या और कलाएँ सीखें करैं सभी व्यापार शिवै ।
रण में कायर हों न कभी हम बनैं बलिष्ठ उदार शिवे ।। ४ ।।
वैर फूट ईर्ष्या सब छोड़ैं करै मथः उपकार शिवे ।
मिल-जुल रहैं परस्पर सारे, हो सुख का संचार शिवे ।। ५ ।।
श्रीहरि सभी शक्ति भक्तों का विस्तृत हो साम्राज्य शिवे
कवियों की गति रुके नहीं चट होवे पार जहाज शिवे !।। ६ ।।

जय श्री जगदम्बा की

–:❀:–

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुस्तक मिलने का पता—

१. कविभूषण पं० श्रीहरि शास्त्री दाधीच

महल, गोविन्द दासजी का बाग

रामनिवास बाग के पास

जयपुर (राजस्थान)

२. गोपाललाल माथुर (नाग) चाकसू वाला

खजाने वालों का रास्ता, तीसरी गली

जयपुर (राजस्थान)

फ्रैन्ड्स प्रिन्टर्स, जौहरी बाजार, जयपुर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi